चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र
1st Feb '55
6 as
SANKAR...

Photo by N. Ramakrishna

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

अब क्या करें ?

प्रेषक
स्नेहलता देवी माथुर, खण्डवा

कानों कान अच्छी सलाह
Royal Cream
'अपने पिता से जे. बी. मंघाराम
'रॉयल क्रीम' बिस्कुटों का डब्बा
खरीदने को कहो। तुम्हें इसकी सुगन्ध,
स्वाद और क्रीम बहुत पसंद आयेगी!'
तासीर में बढ़िया...
विटामिन में अच्छे!
इन्हें रंग-बिरंगे एयरटाइट पेकट में रखा जाता
है। मंघाराम 'रॉयल क्रीम' बिस्कुट सब से
अच्छे उपहार भी हैं।
J. B.
MANGHARAM'S
ROYAL
CREAM
BISCUITS
जे. बी. मंघाराम एण्ड कंपनी - ग्वालियर.
मद्रास शाखा : ३५/३७ तंबुचेट्टी स्ट्रीट, जी. टी., मद्रास.
M-2

चन्दन और नन्दिनी

चन्दन और नन्दिनी दोनों भाई बहिन थे। एक बार वे माता पिता के साथ अपने बगीचे में घूमने गये। वे बहुत खुश थे। उन्होंने बगीचे में इधर उधर टहलते समय दीवार के पास एक नीम के पेड़ पर निम्बोली देखी। नन्दिनी ने कहा–"कैसे सुन्दर हैं ये फल! ये जरूर मीठे होंगे। क्या वे मीठे नहीं होंगे भैय्या?" चन्दन ने कहा–"आओ, चखकर देखें।"

जब उन्होंने निम्बोली मुख में डाली तो वे थूकने लगे। "कितनी कड़वी! कितनी गन्दी!" गुस्से में चिल्लाते हुये वे अपने पिताजी के पास गये और कहा–"वह पेड़ बहुत गन्दा है, पिताजी उसे कटवा दीजिये।" उनके गुस्से का कारण सुनकर पिता ने कहा–"तुम्हें मालूम नहीं, वह बहुत उपकारी पेड़ है। इसके फल खाये नहीं जाते, इसका रस कई औषधियाँ बनाने के काम में आता है। जैसे, "**नीम टूथ पेस्ट**" जिससे तुम दाँत साफ करते हो। इसमें नीम के कीटाणु नाशक रस के अतिरिक्त और भी कई लाभप्रद गुण हैं। 'नीम टूथ पेस्ट' के उपयोग से तुम्हारे दाँत कितने सफ़ेद हैं, अब दाँतों में कोई तकलीफ भी नहीं है। कलकत्ता केमिकल के "**मार्गो सोप**" के बारे में सोचो। इससे रोज शरीर धोने से तुम्हार शरीर कितना साफ और नीरोग है। देखो "**नीम टूथ पेस्ट**" और "**मार्गो सोप**" कैसे उपकारी हैं। अब भी क्या पेड़ कटवाने के लिये कहोगे?"

"नहीं पिताजी!" चन्दन और नन्दिनी ने कहा–"हमें नहीं मालूम था कि नीम का पेड़ इतना उपयोगी है। हम नीम और नीम से बनाये हुये "**नीम टूथ पेस्ट**" और "**मार्गो सोप**" की बातें आज ही अपने दोस्तों को कहेंगे।"

(बच्चों के लिये, कलकत्ता केमिकल द्वारा प्रचारित)

—: बहुमुल्य हुनर सिखाने वाली हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तकें :—

मीनाकारी शिक्षा २।।।) स्वर्णकार शिक्षा २।।।) कटाई सिलाई शिक्षा ३।।) अपटुडेट फैशन बुक २।।) सिलाई मशीन मरम्मत ३) बुनाई शिक्षा (स्वेटर आदि) ४) एम्ब्रायडरी शिक्षा ४) नवीन पाक शास्त्र ४) आचार चटनी मुरब्बे बनाना ३।) स्त्री शिक्षा अथवा चतुर गृहिणी ३।) बंगाली मिठाइयाँ बनाना ३।) श्री बाल्मीकि रामायण १२) श्रीमदभगवत गीता ३) महाभारत सम्पूर्ण १२) भक्त पूर्णमल ३।।) रामायण तुलसी कृत भा. टी. १२) राधेश्याम रामायण ५।।) बड़ा भक्ति सागर ३) विश्राम सागर १०) शार्ङ्गधर संहिता ६) भजन पुष्पांजली २।।) श्री प्रेम सागर ४) एलोपैथिक डाक्ट्री गाइड ५) एलोपैथिक इन्जेक्शन बुक ५) कम्पाउन्ड्री शिक्षा ३।।) इलाजुलगुर्बा ५) एलोपैथिक मिटेरिया मेडिका ५) नाडी ज्ञान तरंगणी २।।) पशु चिकित्सा ३) आधुनिक एलोपैथिक गाइड १०) सचित्र बूटी प्रचार वैधक ३) दुग्ध चिकित्सा २।।) जर्ही प्रकाश ४।।) रेडियो गाइड ६) क्रूड आइल इंजन गाइड ६) क्रस्टल रेडियो सैट बनाना २) इलैक्ट्रिक गाइड ६) इलैक्ट्रिक वायरिंग ५) इलैक्ट्रो प्लेटिंग ४।।) इलैक्ट्रिक गैस वेल्डिंग ६) बैट्री विज्ञान २।।) सायकल मरम्मत गाइड ३) मोटर मिकेनिक गाइड ६) आरमेचर बाइंडिंग ६) घड़ी साजी शिक्षा ३।।) ग्रामोफोन मरम्मत गाइड ३) हारमोनियम मरम्मत गाइड ३) खराद शिक्षा टर्नर गाइड ३) लोको मोटिव इंजन गाइड १२।।) मोटारकार वायरिंग ६) आयल इंजन गाइड ६) स्टीम वायलरज गाइड १०) ट्रेक्टर गाइड ६) वर्क शाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ४) आधुनिक साबुन शिक्षा ३।।) प्लास्टिक के सामान बनाना ३।) ज्योतिष शास्त्र ६) खेती बागबानी शिक्षा ३) आतिशबाजी बनाना ३।) शर्बत विज्ञान ३।) उर्दू हिन्दी टीचर २।।) सरल हिन्दी इंग्लिश टीचर २।।) सुगंधित तेल बनाना ३।) फोटोग्राफी शिक्षा ३) पामिस्ट्री (हाथ रेखा ज्ञान) ६) रंगाई धुलाई शिक्षा ३।) रोशनाई साजी ३।) व्यापार दस्तकारी २।।) भारत का संविधान ३) शशीकान्ता २४ भाग १५) दक्षिण का जादू ३) रबड़ के गुब्बारे बनाना ३।) न्यु ओक्सफोर्ड डिक्शनरी ३।।) मोम बत्तियां बनाना ३।) व्यायाम कल्प २) दुष्यन्त सरोवर ४) बूट पालिश बनाना ३।) बेकरी बिस्कुट बनाना ३।) चित्रकारी शिक्षा ४।।) फिल्म संगीत बहार २।।।) फिल्मी हारमोनियम गाइड ३) सिनेमा मशीन ओपरेटर गाइड ५) अकबर बीरबल विनोद २।।) आयना साजी ३।) कारपेंट्री शिक्षा १०) छोटे छोटे व्यापार २।।) गृह उद्योग लगभग २५० घरेलू धन्धे ४) आइसक्रीम बनाने की शिक्षा ३।) चन्द्रकान्ता उपन्यास ३) चन्द्रकान्ता सन्तति २४ भाग २१) भूतनाथ २१ भाग २१) मनुस्मृति ४।।) किस्सा हातिम ताई २।।) किस्सा गुलबकावली २।।) किस्सा तोता मैना २।।) हिन्दु राष्ट्र के चार महा पुरुष ३) तबला सितार बांसुरी गाइड ३) खून पर खून २।।) जहरी नागन २।।) मैं ऐक्टर कैसे बनी २) चोली की चोरी २।।) इन्द्रजाल ३) ताश के खेल २।।) जादू मिस्मरेज़म २) छः रुपये में अंग्रेजी मैट्रिक पास ६)

पुस्तकें वी० पी० द्वारा मँगाने का पता : प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय पृथक है।

कॉटेज़ इण्डस्ट्री (H. O. M. M - 6) पी० बी० १२६२ अंगूरी बाग, देहली ६.

इलैक्ट्रिक रेडियो गाइड :–इस पुस्तक से केवल १५) में ऐसा रेडियो तैयार कर सकते हैं, जो बिना बिजली के सुना जा सके। साथ ही बिजली के काम की जानकारी प्राप्त कर २००) मासिक कमाइये। मूल्य ३) **भाषा विज्ञान :**–इस पुस्तक से चीनी, जापानी, फ्रेंच, जर्मन, रुसी इत्यादि १४ भाषा सीखिये। मूल्य ४) चित्रकारी व पेन्टिंग शिक्षा २॥) सिलाई कटाई शिक्षा २॥) मोटर ड्रायविंग गाइड ३) मोटर मेकनिक गाइड ३) बाँसुरी शिक्षा २) पाक विज्ञान २॥) गोरे सुन्दर बनने का उपाय २।) फोटोग्राफी शिक्षा २॥) अकबर बीरबल विनोद २॥) कसीदाकारी पुस्तक (जिस में सैकड़ों डिज़ाइन हैं) ३) हिन्दी इंग्लिश टीचर २॥) ब्रह्मचर्य साधन २॥) प्रत्येक आर्डर पर वी. पी. खर्च ।॥) अलग। **पता : सुलेखा बुक डिपो, महावीरगंज–अलिगढ़ (यू. पी.)**

घर का सिनेमा प्रोजेक्टर

घर में ही अपने मित्रों के साथ वास्तविक सिनेमा का आनन्द उठाइये। टार्च या बिजली (एसी. या डीसी.) से इसका प्रबंध बड़ी आसानी से किया जा सकता है। ३५ M M वाला फ़िल्म इसके लिए भी उपयोग किया जा सकता है, जो बड़े फ़िल्म की ही तरह पट पर प्रकाश फ़ैलाता है। विविध रंगों में चलनेवाला पूरा चित्र अभिनय के साथ आप देख सकते हैं। १० फुट का फ़िल्म मुफ़्त भेजा जायगा। दाम : रु. १२-८-० । वी. पी. चार्ज रु. ३-०-० । अतिरिक्त फ़िल्म प्रति फुट ०-८-० है। प्रत्येक विशेष पट का दाम रु. ३-८-० है। असंतोषजनक होने पर दाम वापिस किया जायगा।

पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में ही होना अनिवार्य है।

सौभाग्य कार्यालय, फापला, अलीगढ़
(उत्तर प्रदेश) इंडिया.

बिड़ला
कटेली चम्पा
केश तैल
अनुपम गन्ध
एवं केश शोभा
केलिये
वीर-बच्चा
बच्चों की ताकत के लिये
अनुपम टानिक
(बालामृत)
VEER BACHHA
बिड़ला लेबोरेटरीज़, कलकत्ता-२०

हम आश्वासन देते हैं कि विविध रंगों के फोटो आफसेट प्रिंटिंग् और प्रोसेस ब्लॉक मेकिंग् में एक ऊँचा स्तर निभायेंगे।

हम अपने चतुर टेक्नीशियन, कलाकार, आधुनिक मेशिनरी और एक ऐसा बड़ा केमरा, जो ३०" × ४०" का है, और हिन्दुस्तान के किसी भी छपाईखाने में मौजूद नहीं है—इन सारी उपयोगी शक्तियों के साथ आपकी सेवा के लिये प्रस्तुत हैं।

मूल से टक्कर लेनेवाले रीप्रोडक्शन के लिए हम हामी हैं।

प्रसाद प्रोसेस

चन्दामामा बिल्डिंग्स, :: मद्रास - २६

चन्दामामा

विषय - सूची

बच्चों की हरेक बीमारियोंका
सर्वोत्तम इलाज

बालसाथी

सम्पूर्ण आयुर्वैदिक पद्धति से बनाई हुई बच्चों के रोगों में यथा बिम्ब-रोग, पेंठन, ताप (बुखार) खाँसी, मरोड़, हरे दस्त, दस्तों का न होना, पेट में दर्द, फेफड़े की सूजन, दाँत निकलते समय की पीड़ा आदि को आश्चर्य-रूप से शर्तिया आराम करता है। मूल्य १) एक डिब्बी का।

सब दवावाले बेचते हैं।

लिखिए:- वैद्यजगन्नाथ जी. वराध
आफिस : नडियाद

स्वास्थ्यदायक

'जीवामृतम' का इस्तेमाल करने से दुर्बल देह को बल, दुर्बल वीर्य को पटुता, निद्राहीनों को चैन की नींद, मांस-पेशियों को पुष्टता, सुस्त लोगों को चुस्ती, भुलक्कड़ों को स्मरण-शक्ति, रक्तहीनों को नया रक्त, बदहज़मी से हैरान लोगों को अच्छी भूख, पीले देहोंवालों को तेज़, आदि असंख्य लाभ पहुँचते हैं। यह एक श्रेष्ठ टानिक है, जिसका औरत-मरद, सभी अवस्था वाले हमेशा सेवन कर सकते हैं।

जीवामृतम

शरीर की दृढता, शक्ति और ओज के लिए

आयुर्वेदाश्रमम् लिमिटेड,
मद्रास - १७.

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

भारत की वर्ण-व्यवस्था बहुत पुगनी है। हिन्दू समाज में चार वर्ण हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वश्य और शूद्र।

एक ज़माना था, जब व्यक्ति का वर्ण उसके कार्य से जाना जाता था। हरेक वर्ण का अपना अपना एक विशिष्ट कार्य था।

परन्तु काल-क्रम के साथ वर्ण-व्यवस्था शिथिल होती गई। जन्म के आधार पर जात-पात का निर्णय होने लगा।

अब वह समय आ गया है कि भारत का सविधान किसी प्रकार के जात-पात को स्वीकार नहीं करता है। सब जातियाँ समान हैं। बच्चों को हमेशा इस विषय का ख्याल रखना चाहिये।

वर्ष: 6 फ़रवरी 1955 अङ्क: 6

विश्व-प्रेम

एक लोमड़ी बहुत क्षुधित थी,
खाने को कुछ मिला नहीं जब;
इधर उधर वह लगी भटकने
व्याकुल पगली की नाईं तब !

कहीं झोंपड़ी पर मुर्गी थी
देख उधर ही दौड़ लगाई;
"मुर्गी रानी ! खुशखबरी है !!"
कहकर उसने हाँक लगायी !

बहुत शान में चूर लोमड़ी
यह देखा मुर्गी ने झुककर;
पूछा—"क्या है कहो कहो अब,
खुशियाँ क्यों हैं छायीं मुख पर ?"
"विश्व-प्रेम की बात अभी तक
सुनी नहीं सच क्या तुमने है ?
बन्धु-मित्र हैं अब तो हम तुम
मिल-जुलकर सबको रहने हैं !
हमें चाहिए सभी जगह अब
विश्व-प्रेम की बात प्रचारें;
आओ, मिलकर चलें घूमने
ज़रा सामने नहर किनारे !"

* * *

"कुत्ता जीजा नहीं जानता
विश्व-प्रेम किसको हैं कहते !"
कहकर भागी तुरत लोमड़ी
पीछे मुड़कर लखते लखते !

दिन ही मेरा बहुत बुरा है
कहने से क्या लाभ किसी को;
यही सोचती गयी लोमड़ी
दूर जहाँ ना लखे किसी को !

सुनकर मुर्गी ने सब बातें
मन में निज संतोष किया;
गला साफ़कर उसने तत्क्षण
'कुकड़ूँ कूँ' का शोर किया !
"आता है वह कुत्ता जीजा,
ठहरो ज़रा उधर देखो तो;
उसको भी ले साथ चलेंगे"—
यों कह बोली—"ज़रा रुको तो!"
सुनते ही यह लगी लोमड़ी
शीघ्र भागने विकल वहाँ से,
"क्यों जाती हो ?"—बोली मुर्गी
जाते उसको देख वहाँ से !

मुख - चित्र

एक बार गर्मी में कृष्ण और अर्जुन घूमने निकले। घूमते-घूमते वे खाण्डव-वन के पास गये। जब वे आराम से बैठे हुये थे, तो एक बूढ़े ब्राह्मण ने आकर कहा—'आप तो कोई बड़े आदमी नज़र आते हैं! मुझे बहुत भूख लग रही है। अगर आप यह वचन दें कि मेरी भूख मिटायेंगे तो मैं आपको अपनी कहानी सुनाऊँगा।' तुरंत अर्जुन ने रौब के साथ कहा—'कहो ब्राह्मण! मेरे होते हुये भला तुझे क्या डर?' यह सुनते ही बूढ़े का रूप धारण किये हुये अग्निदेव ने यों कहा—

'मैं अग्नि हूँ! पहिले कभी श्वेतकी नाम के राजा ने अनगिनत यज्ञ किये। अगर यह आप जानना चाहें कि उसने कितने यज्ञ करवाये तो सुनिये। उस यज्ञ में जिन ब्राह्मणों ने भाग लिया, धुँयें के कारण उनकी आँखों में बीमारियां पैदा हो गईं। यज्ञ में घी पीते-पीते मुझे पेट में दर्द हो गया। जब मैंने ब्रह्मा से पूछा कि यह दर्द दूर कैसे किया जाय? तब उसने कहा—'जाओ, खाण्डव-वन को जलाओ! तुम्हारा दर्द खतम हो जायगा। मैंने कई बार इस जंगल को जलाने का प्रयत्न कि या, पर क्योंकि इस जङ्गल का वनदेवता वरुण है, वह हर बार वर्षा कर मेरे प्रयत्न को विफल कर देता है।

जब मैंने यह बात फिर ब्रह्मा से कही तो उसने सलाह दी—'जल्दी ही उस वन में कृष्ण और अर्जुन आनेवाले हैं। उनसे जाकर यह बात कहना और उनकी मदद माँगना। वे ज़रूर तेरी मदद करेंगे।' उसके कहने के अनुसार आप आ भी गये!' अग्निदेव ने प्रार्थना की कि 'मेरी इच्छा पूरी कीजिये!'

अर्जुन ने अपने वचन से मुकरना न चाहा। उसने कहा—'खैर, यह सब तो ठीक है। पर इस समय हमारे पास कोई शस्त्र नहीं है।' तब अग्नि वरुण के पास पहुँचा। वरुण-देवता ने अर्जुन को धनुष, बाण, तरकश और एक रथ दिया, और कृष्ण को भी चक्र और कौमोदकी नाम की गदा दी। इन आयुधों को लेकर कृष्ण और अर्जुन पन्द्रह दिन तक पहरा देते रहे और अग्नि देव ने खाँडव-वन को जलाकर अपनी इच्छा पूरी कर ली।

एक राज्य में चोरियाँ अधिक होने लगीं। इसलिये राजा ने हुक्म दिया कि जो कोई चोर पकड़ा जाय, उसको शहर के बीचों बीच फाँसी पर चढ़ा दिया जाय। कई चोर फाँसी पर लटका भी दिये गये।

उसी राज्य के एक गाँव में हीरा और चन्दू नाम के दो चोर रहा करते थे। साथ के चोरों को फाँसी पर चढ़ा देख, उन्हें डर लगा। उन दोनों ने चोरी का पेशा छोड़ने का निश्चय किया।

'अब तक काफ़ी पाप किये हैं। कम से कम अब तो भले आदमियों की तरह जिन्दगी बसर करें'— हीरा ने कहा।

'अगर पेशा ही करना हो तो कई सारे पेशे हैं'—चन्दू ने कहा।

उन दोनों ने एक गाँव के जमीन्दार के यहाँ नौकरी कर ली। रोज़ बैलों को बाहर चराने ले जाना हीरे का काम था और बाग में पेड़-पौधों को पानी देने का काम चन्दू के जिम्मे था।

पहिले दिन सबेरे सबेरे उठकर हीरा बैलों को जङ्गल में चराने ले गया। बैलों ने उसको खूब तंग किया। वे आपस में लड़ते, इधर उधर भागते, पासवाले खेतों में जा घुसते। हीरा दिक आ गया।

चन्दू ने भी बाग में पौधों को पानी देना शुरू किया। कितने ही घड़े पानी ले जाकर उसने डाले, पर पौधों के लिये पानी काफ़ी नहीं होता था। आधे बाग में भी पानी नहीं दे पाया था कि उसके हाथों में छाले पड़ गये और दुखने लगे। शाम तक वह बाग में पानी देता ही रहा।

उस दिन रात को हीरा और चन्दू आपस में यों बातें कर रहे थे:—

सुशीला कुमारी

'मुझे तो ऐसा लग रहा है, जैसे मैंने काम ही न किया हो। बैलों को जङ्गल में छोड़ दिया, और आराम से पेड़ के नीचे लेट गया। शाम के समय बैल खुद-ब-खुद मेरे पास आ गये। उनके आने की ध्वनि सुन मैं उठ खड़ा हुआ और उन्हें घर हाँक लाया।''—हीरे ने कहा।

'मेरा काम भी कुछ ऐसा था। चार घड़े पानी से ही सारा बाग तरबतर हो गया। दिन भर एक खटिया पर पड़ा रहा'— चन्दू ने कहा।

'शाबाश! ऐसी बात है तो कल तुम बैलों को चराने ले जाना और मै बाग में पानी दे दूँगा।' हीरे ने कहा।

चन्दू को मन ही मन बहुत ही खुशी हुई। 'मैं भी यही कहना चाहता था'— उसने हीरे से कहा।

'चरागाह में सोने के लिये एक खटिया ले जाना। भूल न जाना, समझे।' हीरे ने कहा।

दूसरे दिन उन्होंने अपने काम का अदला-बदला कर लिया। दोनों को एक दूसरे का धोखा मालूम हो गया।

परन्तु हीरे को एक और विचित्र बात भी मालूम हुई। बाग में एक आम के पेड़ की जड़ में चाहे जितना भी पानी डालो, वह झट सूख जाता था। आखिर बात क्या है, यह उसने जानने की ठानी।

उस दिन रात को न हीरे ने अपने काम के बारे में कुछ कहा, न चन्दू ने ही। दोनों ऐसे लेट गये, जैसे सो रहे हों। बाद में, हीरा उठा और पास में रखे रंभे को उठाकर उस आम के पेड़ के पास गया, और उसका थाल खोदने लगा। थोड़ी देर खोदने के बाद रंभे पर कोई चीज़ लगी और 'खङ्ग....!' शब्द हुआ।

तुरंत हीरे ने चारों ओर देखा। चन्दू अन्धेरे में, पास ही खड़ा हुआ था।

'क्या खोद रहे हो?' चन्दू ने पूछा।

'इस पेड़ का थाल ठीक नहीं है। नींद नहीं आई। इसलिये थाल बना रहा हूँ।' हीरे ने कहा, जैसे कोई बात ही न हो।

'फिर बजा क्या था?' चन्दू ने हँसी रोकते हुये पूछा।

'कोई पत्थर-वत्थर होगा। आओ भी, सो जायें।' हीरे ने कहा।

दोनों जाकर सो गये। चन्दू के सो जाने पर हीरे ने चाहा कि देखा जाय, रंभे पर लगा क्या था। परन्तु वह पहिले ही सो गया।

हीरा खुर्राटे मारने लगा। चन्दू उठा। फावड़ा लेकर आम के पेड़ के पास पहुँचा। गढ़ा खोदकर दो गहनों से भरे घड़े निकाले। उन्हें झट कहीं न कहीं छिपाना था। पास में एक तालाब था। एक उथली जगह— जहाँ ज्यादह गहराई न थी, उसने उन दोनों घड़ों को कीचड़ में दबा दिया, और वापिस आकर ऐसे सो गया मानों कुछ जानता ही न हो।

हीरा तड़के उठा। रंभा लेकर पेड़ के पास गया। घड़ों का कहीं पता न

था। वापिस आकर उसने सोये हुये चन्दू के पैरों को गौर से देखा। उसके पैरों में थोड़ा-सा कीचड़ तब भी लगा हुआ था। वह ताड़ गया कि पेड़ की थाल में मिली हुई चीज़ों को उसने तालाब में छुपा दिया है। सीधा तालाब की ओर गया। तालाब में एक तरफ़ मेंढ़कों का शोर न था। वहीं ढूँढ़-ढाँढ़कर गहनोंवाले घड़े खोज निकाले। उनको कन्धे पर रख अपने गाँव की तरफ़ जल्दी जल्दी चल पड़ा।

चन्दू कुछ देर बाद सोकर उठा। उसने देखा कि हीरा बगल में नहीं था। तालाब जाकर गहनोंवाले घड़ों को खोजने लगा। वे वहाँ न थे। वह जान गया कि हीरा उन्हें लेकर अपने गाँव की ओर भाग गया होगा। वह भी गाँव की ओर भागने लगा।

थोड़ी देर भागने पर देखा— उसके आगे हीरा कन्धे पर घड़े रख कर चला जा रहा था। चन्दू रास्ता छोड़ पगडंडी से जा हीरे से पहिले ही रास्ते पर फिर आ गया। उसने रास्ते में अपनी एक नई चप्पल छोड़ दी—फिर सौ, पचास गज़ बाद अपनी दूसरी चप्पल डाल दी। वह पासवाले पेड़ पर चढ़ गया। डाली और पत्तों के पीछे छुपकर खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद गहनोंवाले घड़ों को ढ़ोये, हीरा चला आ रहा था। उसको एक नई चप्पल दिखाई दी। परन्तु वह चूँकि एक ही थी, वह निराश हो आगे बढ़ा। सौ गज़ जाने बाद उसका जोड़ा दिखाई दिया। फिर उसमें इच्छा पैदा हुई। आसपास किसी को न पा हीरे ने घड़े नीचे रखे। चप्पल लेकर दूसरी चप्पल के लिये भागा।

इसी बीच चन्दू पेड़ पर से उतरा और रास्ते में रखे गहनोंवाले घड़ों को कन्धे पर रख गाँव की तरफ़ भागा।

जब चप्पलों को लेकर हीरा आया तो घड़े वहाँ न थे। उसे मालूम हो गया कि वह चन्दू की करतूत थी। वह जल्दी जल्दी चलने लगा और थोड़ी देर में ही चन्दू के घर पहुँच गया। उसका चन्दू के घर में पैर रखना था कि उसे अन्दर से रोना-धोना सुनाई दिया। हीरा अचम्भे में पड़ गया। उसने पूछा कि क्या बात है?

चन्दू की पत्नी और लड़के ने रोते हुये कहा कि चन्दू गुज़र गया है। घर के बीचों बीच, एक खटिया पर, कपड़े से ढ़का चन्दू का शव भी दिखाया। थोड़ी देर हीरा भी उनके साथ रोया। फिर उसने यों कहा—

'हम दोनों अच्छे लंगोटिया यार थे। उसकी आखिरी इच्छा को पूरी करने के सिवाय मैं फ़िलहाल कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। उसने चाहा था कि अगर वह मुझसे पहिले मर जाय तो मैं उसको कटे अरहर के खेत में अरहर के ठूँठों पर घसीटूँ! मैं उसकी आखिरी इच्छा पूरी किये देता हूँ।'

यह कहते कहते हीरे ने चन्दू के शरीर को कन्धे पर डाला, और अरहर के खेत की ओर ले गया।

अरहर के चाकू के समान ठूँठ देख कर चन्दू को लगा, जैसे सचमुच मौत आ गई हो! उस डर लगा कि अगर वह कुछ न बोला तो हीरा उसको खेत में ज़रूर घसीटेगा।

चन्दू तुरंत उठा और हीरे के पैर पकड़ कहने लगा—'भैया! मुझे माफ़ करो! अब इस चोरी से बाज़ आये। आओ, भले मानसों की तरह जियें। फिर यह चोरी की बुद्धि भी क्यों? दो घड़े हैं। तुम एक ले लो और मैं एक ले लूँ; और आराम से जियें।'

गहनोंवाले घड़ों को आपस में बाँट लिया और अमीर हो, वे आराम से जिन्दगी काटने लगे।

प्रतिष्ठान देश में सुप्रतिष्ठित नाम का एक बड़ा शहर हुआ करता था। उस नगर में एक वैश्य स्त्री रहा करती थी। जब उसके पति गुज़र गये तो उसके सम्बन्धियों ने उसकी ज़मीन-जायदाद सब हड़प ली। पति के मरने के समय वह गर्भवती थी। कुछ दिनों बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने जैसे तैसे, अपने लड़के का लालन-पालन किया। वह बड़ा हुआ। तब उसकी माँ ने उससे यों कहा :—

'बेटा! तू बनिये का लड़का है। व्यापार करना तेरा पैतृक पेशा है। दुर्भाग्य से तू गरीब पैदा हुआ। इसलिये तेरे पास व्यापार के लिये ज़रूरी पूँजी नहीं है। परन्तु इस शहर में धनगुप्त नाम का एक करोड़ पति है। वह गरीब बनियों की मदद करता रहता है। उसका दर्शन कर व्यापार के लिये पूँजी माँग!" माँ की सलाह के अनुसार वह लड़का धनगुप्त के दर्शनार्थ गया। उस समय वह करोड़पति किसी नौजवान को डाँट-डपट रहा था :—

'तुम में तनिक भी व्यापार करने की तमीज़ नहीं है। तुम्हें कई बार पूँजी दी। उससे फ़ायदा उठाना तो अलग, पूँजी ही खो बैठे। अगर आदमी अक़्लमन्द हो तो मरे हुये चूहे को ही पूँजी मानकर लाखों कमा सकता है।'

उस लड़के ने, जो करोड़पति की बात सुन रहा था, उससे पूँजी न माँगा। दूरी पर पड़े मरे हुये चूहे को लेकर चला गया। उस चूहे को ले जाकर एक व्यापारी को, उसकी बिल्ली के आहार के लिये दे दिया। उसने बदले में उसको दो मुट्ठी चने दिये। उसने उन चनों को भूना, नमक-मिरच मिलाया,

स्वर्णलता कपूर

और ठण्डे पानी का घड़ा लेकर, शहर से बाहर एक पेड़ के नीचे वह बैठ गया।

कड़ी दोपहरी में, जङ्गल में लकड़ियाँ काट, शहर जाते जाते कुछ लकड़हारों ने पेड़ के नीचे आराम लिया। इस लड़के ने उनका हाल-चाल पूछा और हरेक को खाने को थोड़े से चने और पीने को लोटा भर पानी दिया। उन लोगों ने खुश हो उसको दो दो लकड़ियाँ दे दीं।

इस प्रकार कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कर उसने शहर में बेच दीं, और जो पैसा मिला, उससे फिर चना खरीद लिया। थोड़े दिनों बाद उसके पास इतना पैसा हो गया कि वह स्वयं लकड़ियों के गट्ठर खरीदने लगा। चनों का व्यापार छोड़, वह लकड़ियों का व्यापार करने लगा। उसने कुछ लकड़ियाँ खरीदकर रख लीं। इतने में बरसात आई। लकड़ियों का दाम चढ़ा। उसने अपनी लकड़ियाँ बेच खूब पैसा कमाया। उस पैसे से उसने पंसारी की दूकान खोली।

व्यापार अच्छी तरह चल पड़ा। इतना फ़ायदा हुआ कि उसने अपने मकानात और बगीचे भी बना लिये। वह बनिये का लड़का लखपति हो गया। क्योंकि वह चूहे के कारण रईस हुआ था, उसको लोग 'चूहालाल' कह कर पुकारा करते थे। एक बार 'चूहेलाल' ने सोने का चूहा बनवाया और उसको धनगुप्त को देते हुये कहा—'यह आपकी ही दिखाई पूँजी है। इससे मैंने बहुत पैसा बनाया है। मय ब्याज के मैं आपको वापिस कर रहा हूँ। यह सब आपकी ही मेहरबानी है।'

धनगुप्त को, चूहेलाल की सफ़लता की कहानी सुन बहुत संतोष हुआ। उसने खुशी खुशी अपनी लड़की का उससे विवाह कर दिया और उस सोने के चूहे को उपहार के रूप में अपने दामाद को दे दिया।

अक्लमन्द लड़की

काश्मीर में, एक मछली बेचनेवाली राज-महल में गई। जब रानी मछलियों का भाव-ताव कर रही थी, तो एक मछली टोकरी में से उचक उचककर देखने लगी।

'मुझे मादा मछली ही चाहिये। वह मछली नर है या मादा?'—रानी ने पूछा।

रानी के यह पूछते ही मछली ज़ोर से हँसी। मछली बेचनेवाली ने कहा कि उसके पास सब नर मच्छ ही हैं। रानी ने मछली बेचनेवाली को बाहर भेज दिया। चूँकि उसको देखकर एक मछली हँसी थी, रानी को बहुत गुस्सा आया। वह खिझ कर अपने कमरे में चली गई।

राजा ने उसके गुस्से का कारण मालूम कर लिया। मन्त्री को बुलवा भेजा। 'एक मामूली मछली, सुना है, रानी को देखकर ज़ोर से हँसी है! वह क्यों हँसी? उसकी हँसी का क्या कारण है? यह मुझे महीने भर में बताओ, नहीं तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायगा!'—राजा ने उसको धमकी दी।

मन्त्री का तो दिल बैठ गया। वह सोचता-सोचता घर गया। उसने अपने घर ज्योतिषियों, योगियों, और मान्त्रिकों आदियों को बुलाया और उनसे पूछा—'सुना है, एक मामूली मछली रानी साहिबा को देख कर हँसी थी। क्या तुममें से कोई बता सकता है, इसका क्या कारण था?'

एक भी न बता पाया। मन्त्री जान गया कि वह मौत से न बच सकेगा! इसी फ़िक्र में उसने पलङ्ग पकड़ी।

मन्त्री का लड़का बुद्धिमान था। जवाब ढूँढ़ने के लिये वह स्वयं घर से निकल पड़ा। चलते चलते उसको एक बूढ़ा किसान रास्ते में दिखाई दिया। उसके साथ ही चलने लगा।

रामनारायण व्यास
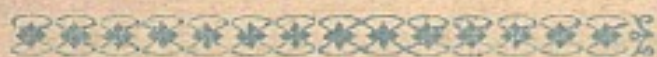
कुछ दूर चलने के बाद मन्त्री के लड़के ने किसान से पूछा—'हमारी इस तरह जाने से तो अच्छा होगा कि हम एक दूसरे के कन्धे पर चढ़कर चलें। चलना आसान हो जायगा। तुम्हारा क्या कहना है?'

किसान ने कोई जवाब न दिया। उसने सोचा, लड़के का शायद दिमाग ठिकाने पर नहीं है। फिर लड़के ने एक पके धान के खेत को देखकर पूछा—'क्यों भाई, यह अभी तक खाया क्यों नहीं गया?' इसका भी जवाब किसान ने न दिया। इस प्रश्न से किसान को सन्देह हुआ कि कहीं वह पागल तो नहीं है?

कुछ दूर चलने के बाद एक जङ्गल पड़ा। मन्त्री के लड़के ने तलवार निकालकर देते हुए कहा—'यह ले जाकर दो घोड़े ला सकते हो? हमारे काम में आयेंगे। तलवार मत खो देना। बहुत कीमती है।'

उसका भी किसान ने कोई जवाब न दिया। पर वह समझने लगा कि वह लड़का हो न हो, सचमुच पागल है।

जङ्गल पारकर दोनों एक शहर में घुसे। उस शहर में उन दोनों से किसी ने कुछ बातचीत न की। मन्त्री के लड़के ने चारों तरफ़ देखते हुये कहा—'यह बहुत बड़ा श्मशान है!' यह सुन किसान हँस पड़ा।

शहर पार कर, वे दोनों श्मशान के पास पहुँचे। श्मशान में मुरदे जल रहे थे। मृत-व्यक्तियों के बन्धु-बान्धव आते जाते लोगों को खाने की चीज़ें बाँट रहे थे। इन दोनों को भी खाने को दिया।

दो-चार कदम आगे बढ़ मन्त्री के लड़के ने इधर-उधर देखते हुये कहा—'यह एक बड़ा भव्य नगर है!'

थोड़ी दूर पर एक नाला पड़ा। किसान ने धोती ऊपर बाँधी, चप्पल उठा, नाला पार

कर गया। लड़के ने कुछ न किया। वह जैसा था, वैसे ही नाले में उतरा।

किसान जैसे-तैसे अपने गाँव पहुँचा। लड़का भले ही पागल हो, क्योंकि वह इतनी दूर से उसके साथ आ रहा था, उसको उसने अपने घर भोजन का न्योता दिया।

लड़के ने कहा—'मुझे तुम्हारे घर आने में तो कोई एतराज़ नहीं, परन्तु इससे पहिले कि तुम मुझे अपने घर बुलाओ, यह देख लो कि छत के बाँस पके हैं कि नहीं।

'इस पागल से बातें करना ही गल्ती है!'—यह सोच किसान अपने घर चला गया। उसने अपनी पत्नी और बेटी को 'पागल' के बारे में बताया।

किसान की लड़की बहुत ही होशियार और अक़्लमन्द थी। पिता की बात सुनकर उसने यों धीमे धीमे कहा—

'पिताजी! यह लड़का पागल नहीं है। वह तो बहुत होशियार लगता है। इसी कारण तुम्हें उसकी बातें समझ में नहीं आईं। उसका एक दूसरे के कन्धे पर चढ़कर चलने का मतलब था कि एक दूसरे को कहानियाँ सुनाते चलें। 'क्यों भाई! इस खेत को काटकर अभी तक खाया क्यों नहीं गया?'- इसका मतलब भी दूसरा है। अक्सर किसानों पर कर्ज़ रहता है, उसका मतलब था कि महाजन उसको अभी तक काट क्यों नहीं ले गये? 'तलवार लेकर दो घोड़ों को लाओ!' कहकर वह बतलाना चाहता था कि जङ्गल से दो डंडे काट लाओ। डंडा तो जङ्गल में बहुत काम का होता है! शहर में उससे किसी ने बातचीत नहीं की; इसलिये उसने उसको श्मशान कहा। चूँकि श्मशान में उसकी आवभगत हुई थी, इसलिये उसने उसको शहर कहा। नाला पार करते समय, उसको क्या मालूम

था कि पानी में क्या हो, इसलिये उसने जूते नहीं उतारे; धोती ऊपर नहीं की। वह बहुत अक़्लमन्द है। अगर तुम कहते कि हमारे छत के बाँस बहुत मज़बूत हैं, तो वह ज़रूर हमारे घर आता। उसने यह जानने के लिये ही कि हम उसका आतिथ्य कर सकते हैं कि नहीं, शायद यह कहा था। देखो, मैं उसका आतिथ्य करती हूँ!'

किसान की लड़की ने एक छोटी-सी कटोरी को पूरा-पूरा घी से भरा। बारह रोटियाँ और एक कटोरे में दूध भर, नौकर के हाथ बस्ती के बाहर ठहरे हुये मन्त्री के लड़के के पास भेजा। साथ एक चिट्ठी भी दी, जिसमें यह लिखा था—

'प्रिय मित्र! चाँद पूरा है। वर्ष में बारह मास होते हैं। समुद्र तट को काट कर बाहर आने को उतावला हो रहा है!'

किसान की दी हुई चीज़ों को लेकर जब नौकर मन्त्री के लड़के के पास जा रहा था, तो रास्ते में उसको उसका लड़का मिला। उसने पिता से कुछ चीज़ें खाने के लिये ले लीं। बची-खुची चीज़ों को लेकर वह मन्त्री के लड़के के पास पहुँचा।
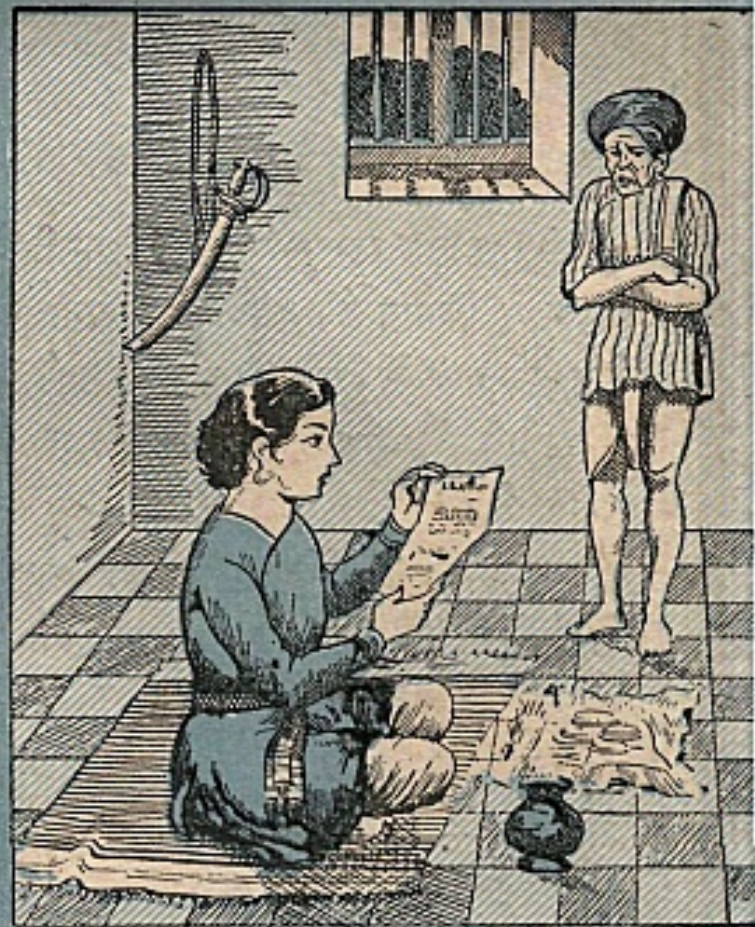
लड़के ने खाना खाकर, किसान की लड़की की चिट्ठी पढ़, उत्तर यों दिया—

'प्रिय मित्र! आमावस के कारण चन्द्रमा का पता ही नहीं लगा। वर्ष में ग्यारह ही महीने हैं। समुद्र में पानी आधा है!'

यह जवाब पढ़ते ही किसान की लड़की ने नौकर से तुरंत पूछा—'तूने घी, एक चपाती और दूध का क्या किया?' उसकी चोरी मालूम हो गई।

उसके बाद बूढ़ा किसान, लड़के को अपने घर बुला लाया। मन्त्री के लड़के और किसान की लड़की में बहुत देर तक

बातचीत होती रही। आखिर में मन्त्री के लड़के ने किसान की लड़की से, रानी को देखकर मछली के हँसने की बात भी पूछी——मछली के हँसने का क्या कारण हो सकता है ?'

रानी के महल में शायद कोई आदमी बिना किसी को पता लगे, रह रहा होगा!' किसान की लड़की ने कहा।

मन्त्री के लड़के को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—'अगर यह बात सच हुई, तो इसे साबित करने के लिये क्या तुम मेरी मदद करोगी ? तुम मेरे पिता के प्राण बचानेवाली होगी!'

किसान की लड़की ने मान लिया और वह मन्त्री के लड़के के साथ चल पड़ी। दोनों मन्त्री के घर आये। मन्त्री बहुत आनन्दित हुआ और उसने राजा से मछली के हँसने का कारण बता दिया।

'इसके लिये सबूत ?' राजा ने पूछा।

'शहर में एक चौड़ा गढ़ा खुदवाइये।' किसान की लड़की ने सलाह दी।

एक चौड़ा गढ़ा खोदा गया और रानी की सेविकाओं को उसमें कूदने के लिये कहा गया। कोई भी न कूद पाई। सिर्फ एक साहस कर कूद सकी।

'वह औरत नहीं है; परीक्षा करके देखिये!'—लड़की ने कहा। उसका कहना ठीक निकला। वह स्त्री नहीं थी; स्त्री वेष में, अतःपुर में रहनेवाला एक आदमी था! चूँकि किसान की लड़की ने एक धोखेबाज़ की पोल खोल दी थी, रानी बहुत खुश हुई। उस आदमी को सज़ा दी गई।

राजा ने मन्त्री को बहुत सारा इनाम दिया, और उसके लड़के और किसान की लड़की का धूम-धाम से विवाह करवाया।

[१३]
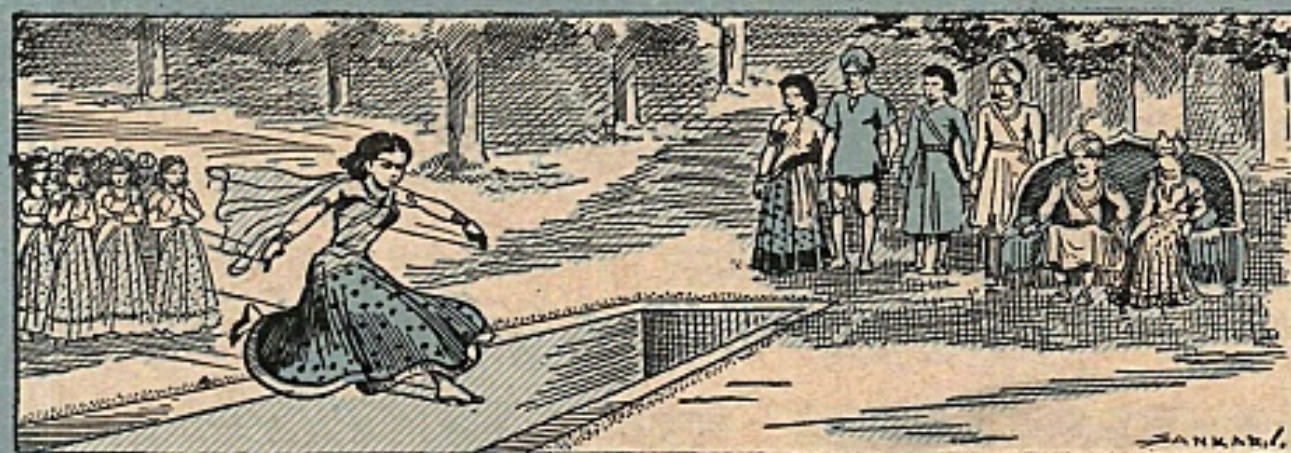
[गुफा में छुपे हुये समरसेन को व्याघ्रदत्त के सैनिकों ने बांध लिया था न? बाद में व्याघ्रदत्त ने उससे शाक्तेय और उसके त्रिशूल के बारे में पूछा था। जब समरसेन ने कहा कि उसको कुछ मालूम नहीं है, तो उसको मारने का निश्चय किया गया। परन्तु उसी रात दो सैनिक आकर उसको कैद से छुड़ा ले गये।]

समरसेन और उसको छुड़ाकर ले जानेवाले दोनों सैनिक जब गाँव में पहुँचे, तो वहाँ तहलका मचा हुआ था। शोर-शोरवा हो रहा था। भाले-बरछे लेकर व्याघ्रदत्त के सैनिक घरों की तलाशी ले रहे थे। डर के मारे कई सारे गाँववाले पासवाले पहाड़ों और जङ्गलों में भाग रहे थे।

जो कोई उनके सामने आता, सैनिक उससे पूछते—" शिवदत्त कहाँ है? शिवदत्त कहाँ है?" जब वह कहता कि—" मुझे मालूम नहीं है," तो उसे बुरी तरह सताते, मारते-पीटते।

जब वे गाँव से थोड़ी दूर ही थे कि समरसेन और उसके साथियों ने यह भयङ्कर दृश्य देखा। इसलिये वे सीधे गाँव में न गये। वहीं पेड़ों की आड़ में खड़े हो, वह दृश्य गौर से देखने लगे। " यह शिवदत्त कौन हो सकता है?"—समरसेन रह रहकर सोचने लगा।

"यह शिवदत्त कौन है? और ये सैनिक कौन हैं, जो गाँववालों को सता रहे हैं?" समरसेन ने साथ के सैनिकों से कुछ घबराते हुये और कुछ उत्सुकता से पूछा।

एक सैनिक ने जवाब दिया—"यह शिवदत्त हमारा सरदार है। हम आपको उनके हुक्म पर ही कैद से छुड़ाकर लाये हैं। गाँव को तहस-नहस करनेवाले ये व्याघ्रदत्त के सैनिक हैं"।

यह जवाब सुनकर समरसेन को तसल्ली न हुई। उसका यह सन्देह कि शिवदत्त ने उसको क्यों कैद से छुड़ाया है, वह उससे क्या आशा करता है, वैसा का वैसा ही बना रहा। शिवदत्त और व्याघ्रदत्त में क्यों शत्रुता है, यह भी समरसेन न जान सका।

"तब हमें अब क्या करना चाहिये?" समरसेन ने पूछा।

उसके साथ के दोनों सैनिक एक दूसरे की तरफ़ ताकने लगे। उनके हाव-भाव देखने से साफ़ लगता था कि वे यह सोच नहीं पा रहे थे कि क्या किया जाय। सब के सब बड़ी आफ़त में फंसे हुये थे।

"शिवदत्त ने आपको यहाँ लाने के लिये कहा था। वह आपसे मैत्री करना चाहता है, इसीलिये उसने हमें आपके पास भेजा था। परन्तु व्याघ्रदत्त को उसके रहने की जगह का भेद मालूम हो गया। इसी वजह से उसके सैनिक गाँव की छानबीन कर रहे हैं। शिवदत्त को पहिले से ही इस खतरे के बारे में मालूम हो गया होगा, और वह कहीं भाग गया होगा"—सैनिक ने कहा।

जब तक यह नहीं मालूम होता कि शिवदत्त किस तरफ़ भाग गया है, समरसेन और उस सैनिकों के खतरे में पड़ जाने की आशंका थी, यह वे भलीभांति जान गये थे। वे यह सोच ही रहे थे कि क्या किया जाय

कि पीछे से एक बाण की ध्वनि सुनाई दी। झट तीनों ने बाण की तरफ़ देखा। दूरी पर पेड़ में छुपा हुआ एक व्यक्ति हाथ उठा उठाकर उनको बुला रहा था।

वह बुलानेवाला व्यक्ति शत्रु है, या मित्र समरसेन को सन्देह होने लगा। परन्तु वह प्रदेश उसके लिये नया था, सिवाय इसके कि उसके साथवाले जो कहें करने के, उसके पास कोई चारा भी न था।

समरसेन के साथवाले एक सैनिक ने धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ा। उसके उत्तर में पेड़ पर छुपे हुये व्यक्ति ने दो तीन बाण छोड़े, और दायें हाथ पर बायाँ हाथ रख, दोनों हाथ ऊपर कर के दिखाये।

"वह हमारा मित्र ही है। उसने रहस्य संकेत को समझ लिया है। वह शिवदत्त का कोई नौकर ही हो सकता है, और कोई नहीं। आओ चलो, चलें!"—सैनिक ने कहा।

समरसेन और वे दौनों सैनिक उस पेड़ के पास गये, जहाँ वह व्यक्ति छुपा हुआ था। जब वे तीनों पेड़ के पास पहुँचे, तो वह व्यक्ति पेड़ पर से उतर आया।

"आप ही के लिये मुझे शिवदत्त यहाँ बैठा गया है। आज सवेरे से ही व्याघ्रदत्त के

तुझे मालूम है कि वे कहाँ हैं?"—एक सैनिक ने पूछा।

तब उस नये व्यक्ति ने कहा—"वे कहाँ रह रहे हैं, यह तो उन्होंने मुझे नहीं बताया। मगर वे यह तस्वीरवाला कागज़ दे गये हैं। उन्होंने कहा था कि इस तस्वीर में उन्होंने उस जगह पर निशान कर दिया है, जहाँ वे रह रहे हैं। आप स्वयं देख लीजिये मुझे तो कुछ समझ में नहीं आया!"— उसने एक लिपटा हुआ कागज़ समरसेन को दे दिया।

समरसेन ने उस कागज़ को खोलकर ध्यान से देखा। उसमें पहाड़ों में कुछ खंडहर, कुँऐं और बावड़ियाँ चित्रित थीं। हर चीज़ के नीचे उसका नाम भी लिखा हुआ था। परन्तु उसमें ऐसा कोई चिन्ह न था, जिससे यह मालूम हो सके कि शिवदत्त कहाँ छुपा हुआ है। यदि कोई चिन्ह था भी, तो उसे मालूम नहीं हो रहा था।

"शिवदत्त पहाड़ों में इन खंडहरों की तरफ़ भाग गया है। मुझे नहीं मालूम, वह ऐसी जगह पर क्यों गया है, जब कि वह आफ़त में है? कुछ भी हो, हमें भी तो इसी तरफ़ चल देना चाहिये न?" समरसेन ने उनको तस्वीर दिखाते हुये पूछा।

सैनिकों ने गाँव को घेर लिया है। यह बात शिवदत्त को दूतों द्वारा पहिले ही मालूम हो गई थी। वह नौकर-चाकरों के साथ भाग गया। मै आपकी यहाँ इन्तज़ार कर रहा था।" उसने कहा।

उसकी बात सुन सब को जान में जान आई। मगर शिवदत्त कहाँ भाग गया था? उससे कैसे मिला जाय? यह उनके सामने एक उलझी हुई समस्या थी।

"ये समरसेन हैं। व्याघ्रदत्त के कैदखाने से उन्हें छुड़ाकर हम ला रहे है। इनको जल्द से जल्द शिवदत्त से मिलना है। क्या

दोनों सैनिकों ने स्वीकृति में अपने सिर हिलाये। परन्तु उस तस्वीर को देखकर रास्ता निकालने की जिम्मेवारी समरसेन पर पड़ी। उसने एक बार गाँव की ओर देखा। तब सारा गाँव जल रहा था, और व्याघ्रदत्त के सैनिक गाँव को जलता देख खुशियाँ मना रहे थे।

समरसेन ने निश्चय कर लिया था कि साथ के सैनिकों की मदद से व्याघ्रदत्त के सैनिकों का मुकाबला करना खतरे से खाली नहीं है। इसलिये उसके सामने अब एक ही काम था—जाकर शिवदत्त से मिलना, और जो कुछ वह कहे, उसे सुनना।

समरसेन ने तस्वीर देखकर आगे रास्ता निकाला। यह ज़रूरी था कि तस्वीर में दिखाई गई दिशाओं की ओर होशियारी से चला जाय। इसके आलावा, यह भी देखना था कि रास्ते में व्याघ्रदत्त के सैनिकों से कहीं मुकाबला न हो जाय।

थोड़ी दूर तक जङ्गल के बीच में से चलकर वे एक पहाड़ी इलाके में पहुँच गये। आस-पास छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ थीं। जहां कहीं भी देखो, न आदमियों के पैरों के

निशान थे, न कोई गाँव वगैरह ही थे। सब सुनसान था।

समरसेन ने एक टीले पर चढ़ चारों तरफ़ देखा। पहाड़ की तराई में सिर्फ़ उसे छोटे छोटे नाले दिखाई दिये। परन्तु एक जगह कुछ सपाट ज़मीन थी। उसने सोचा, वहाँ पहुँचने पर शायद आगे जाने का रास्ता मिल जाय।

वे पहाड़ पर से नीचे उतरे। सारी जगह पर इधर उधर बड़े बड़े पत्थर बिखरे हुये थे। छोटी छोटी झाड़ियाँ भी कहीं कहीं थीं। भयंकर इलाका था। चित्र में

CHITRA

दिखाये गये न खंडहर, न खंडहर तक पहुँचने का रास्ता ही वहाँ कहीं दिखाई दिया। वे घबराने लगे।

ज्योंही समरसेन और उसके साथी सैनिक जब थोड़ी दूर आगे बढ़े, तो उन्हें एक ऐसा नज़ारा दिखाई दिया, जिसे देखकर वे चकित ही नहीं हुये, बल्कि डरे भी। ऊँचे पहाड़ के किनारे पर से, एक राक्षस के मुख में से एक झरना नीचे गिर रहा था। पत्थर से उस राक्षस का मुँह बहुत अच्छी तरह गढ़ा हुआ था! देखनेवालों को झरने को राक्षस के मुख में से आता देख, लगता था, मानों वह नाला राक्षस के मुख में से ही निकलकर नीचे गिर रहा हो।

"यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। आसपास में तो कहीं मनुष्यों के रहने का नामोनिशान नज़र नहीं आता। परन्तु यह स्पष्ट है कि राक्षस के मुँह को मनुष्यों ने ही गढ़ा है।" दाँतों तले अंगुली दे समरसेन ने कहा। वह अचम्भे में पड़ा हुआ था।

वे उस झरने को देखते देखते वहीं खड़े रहे। उनको ऐसा लगा कि झरने के पीछे कोई सुरंग है। समरसेन ने सोचा, हो सकता है कि शिवदत्त उसी रास्ते से भाग गया हो। वह बहुत ही सुरक्षित स्थान था। किसी को यह सन्देह भी न हो सकता था कि वहाँ क्या हो सकता है। दीखने को सिर्फ़ झरना ही दीखता था, पर उसके पीछे सुरंग था!

समरसेन ने शिवदत्त की भेजी हुई तस्वीर खोलकर देखी। उसमें एक जगह झरने का निशान था, उसे देख उसने जान लिया कि उसका अनुमान ठीक था। सैनिकों के साथ, घुटने भर पानी में से गुज़रकर वे सुरंग की तरफ़ गये।

कुछ दूर तक चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा था। जब वे दिल बान्धकर थोड़ी दूर आगे बढ़े, तो उन्हें रोशनी दिखाई दी। आखिर, सुरंग की परली तरफ़ उन्हें समतल भूमि दिखाई दी। चारों तरफ़ ऊँचे ऊँचे पहाड़ थे।

समरसेन और सैनिक जब सुरंग से बाहर निकले, तो जिधर देखो, उधर मोर ही मोर दिखाई देते थे। उनमें से कुछ नाच रहे थे, कुछ अज़ीब अज़ीब आवाज़ कर हवा में उड़ रहे थे। वह सारी जगह मोरों से भरी पड़ी थी।

"इतने मोर पहिले मैंने कहीं भी नहीं देखे।" समरसेन ने आश्चर्य से कहा। उसके साथ के सैनिको ने भी पहिले कभी ऐसी विचित्र जगह न देखी थी। समरसेन ने सोचा, मोरों का सौन्दर्य देखने से काम नहीं चलेगा। पहिले यह मालूम करना है कि शिवदत्त कहाँ है?

वे थोड़ी दूर और चले और एक गुफ़ा के पास पहुँचे। उन्हें यकायक हाथी का हुँकारना सुनाई दिया। वे अचम्भे में देख ही रहे थे कि गुफ़ा के अन्दर से एक हाथी लपकता लपकता बाहर आया।

समरसेन और सैनिकों ने इस घटना की कल्पना भी नहीं की थी। हाथी को लपकता देख उनका दिल बैठ गया। डर के मारे वे इधर उधर भागने लगे।

समरसेन एक बड़े चट्टान के पीछे छुप गया। अगर हाथी सुरंग से यकायक बाहर कूदा है, तो ज़रूर कोई न कोई पीछे खतरा रहा होगा, जिसने उसे कूदने के लिये बाधित किया। वह किस प्रकार का शत्रु है, कैसे जाना जाय? शिवदत्त के दिये हुये चित्र में क्या सब चिन्ह वह पहिचान नहीं पाया है?

(अभी और है)

मिथिला नगर के राजा के एक ही लड़का था। उसका नाम कुश था। वह बहुत ही सदाचारी, और सर्व शास्त्रों में पारंगत था। आसपास के देशों में उसकी बड़ी कीर्ति थी। उन देशों के राजकुमार उसके घनिष्ट मित्र थे। इन सब के होते हुये भी उसमें सौन्दर्य न था। यह सोचकर कि वह बदसूरत है, सूखा जाता था। इसी कारण से उसने विवाह भी नहीं किया था। बूढ़े राजा ने कुश को कई बार समझाया कि वह विवाह कर देश की परम्परा बनाये रखे।

हमेशा कुश पिता से यही कहा करता कि "भला मुझ बदसूरत से कौन राजकन्या विवाह करेगी?"

"तेरा परिचय होने पर कौन राजकन्या तुझ से प्रेम न करेगी?"—पिता उल्टा प्रश्न पूछा करता।

पिता की बात को टालने के लिये कुश को एक उपाय सूझा। उसने स्वयं सोने की एक बहुत सुन्दर मूर्ति बनाई और कहा कि यदि उसको वैसी कन्या कहीं मिल सकी, तो वह अवश्य उससे विवाह कर लेगा। उसका विश्वास था कि वैसी कन्या का संसार में मिलना सम्भव नहीं है।

परन्तु मगध राज्य की राजकुमारी प्रभावती की शक्ल उस मूर्ति से लगभग मिलती-जुलती थी। कुश की बनाई हुई मूर्ति के समान कन्या को ढूँढ़ते ढूँढ़ते मिथिला राजा के दूतों के मगध पहुँचने पर यह बात मालूम हुई। मगध राजा के एक नहीं, आठ लड़कियाँ थीं। क्योंकि मगध राजा ने मिथिला के युवराजा की प्रसिद्धि पहिले ही सुन रखी थी, इसलिये अपनी कन्या का उससे विवाह करने के लिये, वह सन्तोष-

रमाशङ्कर विद्यार्थी

पूर्वक मान गया। बिना उसको देखे, उसकी जैसी मूर्ति बनानेवाले से विवाह करने के लिये प्रभावती भी उतावली हो गई।

परन्तु कुश का दिल बैठ गया। उसने पिता से जाकर कहा कि उस अत्यन्त सुन्दर लड़की से उसकी शादी न करवाये। परन्तु राजा ने उसकी एक न सुनी।

"बस, एक साल अगर तेरी पत्नी तेरे साथ रही, तो वह सोचने लगेगी कि तुझसे बढ़कर इस संसार में कोई सुन्दर नहीं है। मेरी बात पर विश्वास कर"—पिता ने कहा। तब कुश ने पूछा—"परन्तु इस वर्ष के भीतर?'

बूढ़े राजा ने एक उपाय सोच निकाला। 'देख, हमारे देश में पुराने ज़माने से एक परिपाटी चली आती है। उस परिपाटी के अनुसार वधु को विवाह के समय वर को देखने का अधिकार नहीं है। तेरा विवाह उस परिपाटी के मुताबिक ही करवा दूँगा।' राजा ने कहा।

'विवाह के बाद?'—कुश ने पूछा।

'उसमें क्या रखा है? एक वर्ष तक तेरे शयनागार में दीप रखने की मनाई कर दी जायगी।'—राजा ने कहा। कुश विवाह करने के लिये बाधित हुआ। उसका विवाह प्रभावती से प्राचीन परिपाटी के अनुसार हुआ। रोज़ कुश पत्नी के पास अन्धेरे में जाया करता। उसे मज़ेदार कहानियाँ सुनाता। मीठे मीठे गाने गाता।

प्रभावती अपने पति की अच्छाई और बुद्धिमत्ता को देखकर फूली न समाती थी। परन्तु बारह महीने तक उसका मुँह देखने का उसे सौभाग्य न मिलेगा, यह सोचकर वह खिन्न रहा करती। रोज़ रोज़ उसका खेद बढ़ता गया। उसको लगा कि बिना पति का मुँह देखे, वह एक क्षण भी न रह सकेगी। प्रभावती ने अपनी दासी को बुला

कर कहा—'चाहे कुछ भी हो, तुमने अगर मेरे पति का मुँह मुझे दिखा दिया, तो मैं तुम्हें मुँह-माँगा इनाम दूँगी।' दासी लालच में आ गई। एक बार जब कुश का शहर में जुलूस निकाला, तो खिड़की के किवाड़ की आड़ में से, प्रभावती को उसने कुश का दर्शन करा दिया।

कुश को देखते ही, प्रभावती का सिर चक्कर खाने लगा। 'उसका पति इतना बदशक्ल है? झूट है। परन्तु राजा की तरह जुलूस में जाने का हक भला किसी और को क्यों होगा? वह चूँकि बदसूरत है, इसलिये विवाह में उसका मुँह देखने न दिया। इसीलिये उसके शयनागार में बत्ती नहीं जलायी जाती। कितना धोखा! कितना झूट!'

प्रभावती को बहुत गुस्सा आया। वह अपने कपड़े और गहने लेकर मायके जाने के लिये तैयार हो गई।

यह बात कुश को मालूम हुई। उसने दुःख से कहा—'जैसी उसकी इच्छा है, उसे वैसे करने दो।'

उसने कह तो दिया, पर जब से प्रभावती मायके चली गई, तब से वह खोया
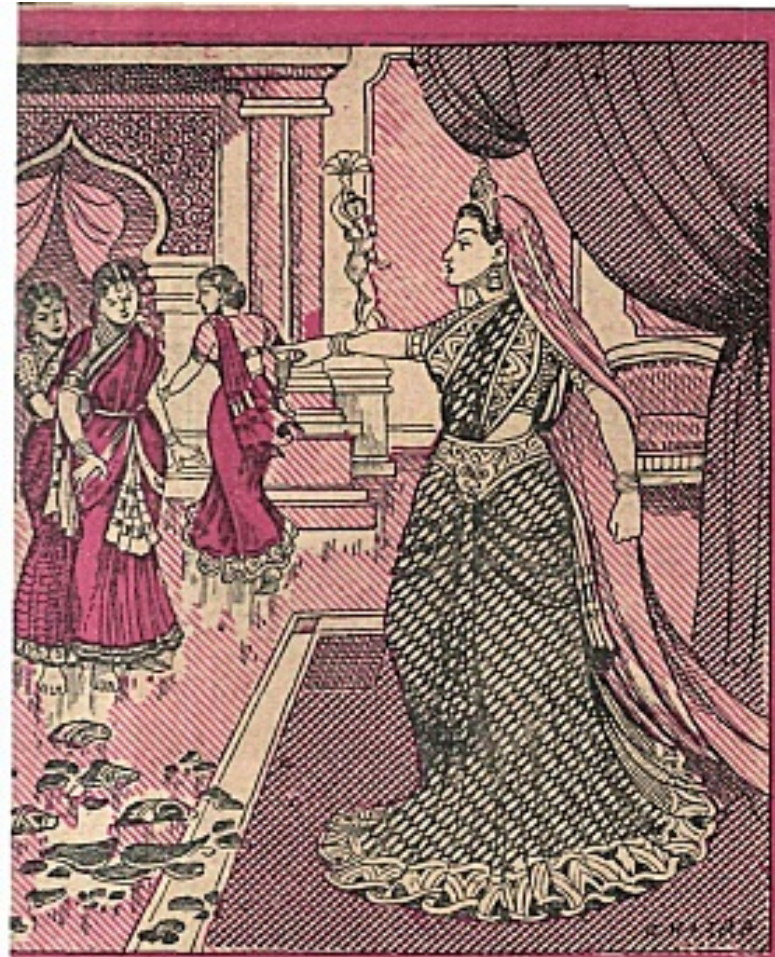
प्रभावती उसकी बांसुरी सुनकर तन्मय हो उठती थी। अब उसको वह ध्वनि काटती-सी लगती थी; बल्कि उसे बहुत गुस्सा आया।

कुश ने एक और तरीके से पत्नी के पास सन्देश भेजने का निश्चय किया। उसने एक कुम्हार के पास जाकर कहा—"दादा! मैं तेरे बनाये घड़ों पर सुन्दर से सुन्दर रंग लगाऊँगा। उनको ले जाकर क्या तू राजमहल में दे सकेगा?"

'अगर तेरी कारीगरी अच्छी रही, तो ज़रूर बेटा।'— कुम्हार ने कहा।

कुश की कारीगरी कोई मामूली न थी। उसके लगाये हुये रंग, और घड़ों पर बनाये हुये चिन्हों को देखकर राजा ने प्रशंसा की। उनको खरीदकर उसने अपनी लड़कियों को उपहार में दे दिया। बाकी राज कुमारियाँ घड़ों को देखकर बहुत आनन्दित हुईं। परन्तु प्रभावती घड़े पर अपना चित्र देख गुस्से से जल उठी। उसको मालूम हो गया कि वह उसके पति का काम था। उसने तत्क्षण घड़े को टुकड़े टुकड़े करवाकर दूर फिंकवा दिये।

इस बार कुश ने पत्नी के पास पहुँचने का एक और उपाय सोचा। राजा के

खोया फिरने लगा। वह न खाता, न पीता न सोता। आखिर वह अपनी राज-पोशाक छोड़, मामूली कपड़े पहिन मगध के लिये चल पड़ा। वह प्रभावती के मन का लगा घाव भरना चाहता था, ताकि वह उस पर तरस खाये, और उसको उस पर दया आ जाय।

मगध पहुँचकर वह रात के समय राज-महल के पास गया। वहाँ बैठ बांसुरी पर एक करुणा भरा राग गाने लगा। गाना सुन प्रभावती ने पहिचान लिया कि उसका पति ही गा रहा था। एक समय था, जब कि

रसोइये के पास जाकर उसने कहा—'बाबू! मैं नये नये पकवान बनाकर राजा का मन खुश कर सकता हूँ। मेरे पकवानों का स्वाद चख तुम्हें इनाम भी दिये जायेंगे। मैं कुछ वेतन नहीं चाहता। मुझे तुम्हारे यहाँ काम करने दो!' रसोइया मान गया।

अगले दिन नये नये पकवानों को देख कर राजा बड़ा खुश हुआ। उसने तुरंत हुक्म दिया कि पकवानों को अन्तःपुर में पहुँचाया जाय। कुश स्वयं सोने के थाल में उन्हें रख अपनी पत्नी के पास गया।

प्रभावती ने अपने पति को पहिचान लिया। वह उसके लिये इतना कुछ कर रहा है, यह सोचकर भी उसके मन में उसके लिये दया न पैदा हुई।

'तेरे हाथ का बनाया हुआ भोजन मुझे नहीं चाहिये। किसी दूसरे के हाथ भेज।' प्रभावती ने बड़े कड़वे ढँग से कहा।

पत्नी का दिल पत्थर का हो गया है। कुश ने समझा कि वह उसको पिघाल न पायेगा। मगध छोड़, काशी जा उसने सन्यास ग्रहण करना चाहा।

जब वह यह सोच ही रहा था कि राजधानी में एक बुरी खबर फैली। कोई सात राजा मगध पर हमला कर रहे थे।

यह जान कि प्रभावती बहुत सुन्दर है और उसने अपने पति को छोड़ दिया है, सुना गया कि इसलिये वे उससे शादी करने के लिये चले आ रहे हैं।

यह बात सुन मगध का राजा घबरा उठा। वह अपनी एक सेना से भला सात सेनाओं का कैसे सामना करे? अगर वह प्रभावती का पुनः विवाह करने को मान भी

जाय तो सात राजा थे। अगर किसी एक से भी शादी की, तो छे शत्रु बनते थे।

इसलिये राजा ने मन्त्री, सेना नायक, पण्डितों को बुलवाकर उनकी सलाह माँगी।

सच पूछा जाय तो राज महल में प्रभावती का किया हुआ काम किसी को न पसन्द था। अत: मन्त्री ने राजा से कहा—

'महाप्रभू! इस आफ़त से निकलने का बस एक ही मार्ग है। राजकुमारी प्रभावती को सात भागों में काटकर, हमला करने वाले राजाओं को एक एक टुकड़ा उपहार में भेज दीजिये। सब के सब वापिस चले जायेंगे। देश में युद्ध का भय भी इस तरह जाता रहेगा।'

मन्त्री और पंडितो की दी हुई सलाह को सुनते ही कुश का पारा चढ़ गया। युद्ध के डर के मारे ये सब के सब मेरी पत्नी की बलि देंगे?'

रसोइये की पोशाक में कुश ने राजा के पास जाकर कहा 'महाराज! आप इन डरपोकों की सलाह पर मत चलिये। आप अपनी सेनायें मुझे दीजिये। मैं सब शत्रुओं को जीत लूँगा।'

मगधराज को आश्चर्य हुआ।

'मेरी सेनाओं का भला एक रसोइया कैसे सेना-नायक हो सकता है?' राजा ने पूछा।

'महाराज! मैं रसोइया नहीं हूँ। आपका बड़ा दामाद हूँ। पत्नी को खुश करने के लिये ही मैंने इतने कष्ट सहे। क्या मैं उसकी प्राणरक्षा के लिये युद्ध में मर नहीं सकता?'

राजा ने अपने दामाद की उदारता की प्रशंसा की। सेना तैयार कर कुश के साथ युद्धभूमि में भेज दी।

यह सुनते ही प्रभावती का पत्थर-दिल भी पिघलकर बहने लगा। इतने उदार

पति के साथ उसने कैसा नीच वर्ताव किया ? वह पति, जो उसकी प्राण-रक्षा के लिये युद्ध में अपने प्राण न्योछावर करने के लिये जब जा रहा हो, तो वह अपने पश्चात्ताप का रोना किसके सामने सुनाये ?

प्रभावती रात-दिन रोती रहती।

परन्तु कुश को युद्धभूमि में कोई खतरा न पहुँचा। क्योंकि आक्रमण करनेवाले सातों राजा कुश के परम मित्र थे। जब वह मिथिला छोड़कर चला गया और उसका कुछ पता कहीं न लगा, तो वे सब घबरा उठे थे।

वे अपनी सेनाओं को लेकर प्रभावती को नीचा दिखाने आये थे, जिसने उनके परम मित्र कुश की इतनी दुर्गति की थी। पर युद्धभूमि में मगध राजा की जगह कुश को पा, उनके आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा।

जब कुश उनको लेकर महल में गया, तो प्रभावती के आनन्द की सीमा ही न थी।

कुश ने सात राजकुमारों का मगध राजा के बाकी सात लड़कियों के साथ विवाह का प्रबन्ध कर दिया। वे इस प्रबन्ध पर बड़े खुश हुये।

परन्तु यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि उनमें से एक भी अपने पति को देखकर उतनी प्रसन्न नहीं हुई होगी, जितनी प्रभावती अपने पति को देखकर।

प्रभावती ने पति के पावों पड़ अपनी गल्तियों के लिये क्षमा माँगी। उसे यह नहीं समझ में आ रहा था कि कुश उसकी आँखों के लिये आखिर क्यों बदसूरत दिखाई दिया।

अब जब वह कुश का मुँह देखती, तो उसको लगता कि उसके पति जितना सुन्दर संसार में कोई नहीं है।

नरकवास

ब्रह्मदत्त जब काशी का परिपालन कर रहा था, तब बोधिसत्व वानर के रूप में पैदा हुये। उस वानर का नाम था 'नंदीय'। नंदीय का एक भाई था। दोनों भाई हिमालय में अस्सी हज़ार बन्दरों के झुन्ड़ के नायक थे। माँ के भरण-पोषण का भार नंदीय पर था। वह बिचारी अन्धी थी।

नंदीय और उसका भाई, जङ्गलों में चुन चुनकर फलों को ला झुन्ड में से एक सेवक द्वारा माँ के पास भेजा करते थे। परन्तु वह सेवक धोखेबाज़ था। वह स्वयं ही फल खा जाता था। माँ तक फल पहुँच ही नहीं पाते थे।

एक बार नंदीय माँ को देखने आया। देखकर वह चकित रह गया। उसने पूछा 'क्यों माँ इतनी कमज़ोर हो गयी हो, जैसे खाना ही न मिलता हो? रोज़ हमारे भेजे हुये फल नहीं खा रही हो?'

'नहीं बेटा, न फल मिलते हैं, न कुछ और मिलता है। अगर खाने को मिलता, तो मैं भला यों कमज़ोर क्यों होती?" माँ ने कहा।

नंदीय ने खूब सोचा। उसे सच मालूम हो गया। उसने झट भाई के पास जाकर जो कुछ गुज़रा था, कह सुनाया। 'भाई! मैं घर में रहकर माँ की देखभाल करूँगा। तू नायक बनकर इस झुन्ड पर राज्य कर।'

तब छोटे भाई ने कहा—"भैय्या! मैं भी तेरे साथ रहकर घर में माँ का पोषण करूँगा।'

इस तरह दोनों मिलकर घर गये। माँ के लिये पीपल के पेड़ पर एक बसेरा बनाया। उसकी हर सुविधा का ख्याल करते हुये वे रहने लगे। परन्तु इस बीच में—

कोई ब्राह्मण तक्षशिला नगर में एक प्रख्यात गुरू के पास शिक्षा पा रहा था।

विद्याभ्यास के समाप्त होने पर, गुरू के पास जाकर उसने जाने की आज्ञा माँगी।

गुरू ने शिष्य से कहा—'बेटा, हमें प्रसन्नता होती है कि तुमने विद्या पूरी कर ली है। तुम्हारा ज़रा तेज़ स्वभाव है। जल्दबाज़ी में कोई क्रूर काम न करना। बाद में पश्चात्ताप करने से भी फ़ायदा न होगा। यही मेरा उपदेश है।' गुरु ने शिष्य को आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण गुरु की आज्ञा ले काशी नगर पहुँचा। उसका विवाह हुआ। उसने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। उसे आजीविका का कोई भी मार्ग न दिखाई दिया। इसलिये धनुष-बाण ले, वह शिकारी का काम करने लगा। जन्तुओं और पक्षियों का शिकार कर, उनका मांस बेचकर जो पैसे मिलते, उनसे घरबार चलाया करता। यही उसका रोज़ का काम था।

एक दिन—

वह खूब घूमा-फिरा, परन्तु उसको एक जानवर भी न दिखाई दिया। जब वह घर वापिस जा रहा था, तो उसकी नज़र पीपल के पेड़ की ओर गई। उसी समय पेड़ के खोखले में माँ को फल आदि,

खिला उसके पीछे नंदीय और उसका भाई आराम से बैठे हुये थे। उन्होंने शिकारी को देखा।

तब पेड़ की ओर देखते हुये शिकारी ने सोचा कि खाली हाथ घर क्यों जाया जाय? उसने नंदीय की माँ को निशाना बनाना चाहा। नंदीय ने यह देखा। तुरंत उसने भाई से कहा—'देख, वह माँ को निशाना बनाकर बाण छोड़नेवाला है। मैं उसके प्राण बचाऊँगा। मेरे मर जाने के बाद यह जिम्मेवारी तेरी रही।'—कहता कहता वह जल्दी जल्दी पेड़ पर से उतरा।

'ओ शिकारी! मेरी माँ को मत मार। वह बूढ़ी है। उसके बदले मुझे मार ले।'— नंदीय ने कहा।

वह पत्थर का दिलवाला शिकारी यह मान गया।' ठीक है'—कहते हुये उसने क्रूरता से नंदीय पर बाण छोड़ा।

परन्तु शिकारी ने अपने वचन का पालन न किया। नंदीय के मरते ही उसने फिर उसकी माँ को मारने के लिये निशाना ठीक किया। यह देख इस बार छोटा भाई पेड़ से उतरकर आया और शिकारी से वही कहा, जो उसके भाई ने कहा था। शिकारी इस बार फिर मान गया, और उसने निर्दय हो छोटे भाई को भी मार दिया।

'मेरे लिये और मेरे कुटुम्ब के लिये ये दो बन्दर काफ़ी हैं।'— शिकारी ने सोचा। परन्तु दूसरे क्षण उसका दिल बदल गया। बिना किसी पाप-भय के, उस हत्यारे शिकारी ने उनकी बूढ़ी माँ को भी अपने बाण से मार गिराया। इस तरह वह उन तीनों बन्दरों को एक डंडे में लटका कर, कन्धे पर रख घर की ओर चला। जब वह अपने गाँव के पास पहुँचा तो उसको पता लगा कि उसके घर पर बिजली गिर पड़ी है, और उसमें उसकी पत्नी और दो बच्चे जल-भुनकर मर गये हैं।

यह बात पता लगते ही वह छाती पीटता पीटता घर की ओर भागा। ज्योंही उसने साहस करके अन्दर जाना चाहा, त्योंही वह जहाँ खड़ा था, वहाँ भूमि फ़ट गई। उसे पाताल में जाते हुये यह बात याद आई—

'मेरे गुरु ने उसी दिन उपदेश दिया था कि क्रूर-कार्य न करना। पश्चात्ताप करने से भी कोई फ़ायदा न होगा। मैं अपने किये हुये पापों का फल भोग रहा हूँ।—' सोचता सोचता वह नरक की ओर बढ़ता गया। फिर वह किसी को न दिखाई दिया।

दोषी कौन है?

एक दिन सबेरे फ़ारस का बादशाह अपने वज़ीर के साथ टैग्रिस नदी के किनारे घूमने निकला। उन्होंने नदी में मछलियाँ पकड़ते हुये एक बूढ़े को देखा।

'अरे! बुढ़ापे में तुम्हें भला यह नौबत कैसे आ पड़ी? रोज़ कितनी मछलियाँ पकड़ते हो? कितना पैसा कमाते हो?' बादशाह ने बूढ़े से पूछा!

'बुढ़ापा है, महाराज! अगर मेहनत न करूँ तो एक दिन भी गुज़ारा न हो। सबेरे से जाल फेंक रहा हूँ, पर अभी तक एक मछली भी नहीं फँसी है।'—बूढ़े ने कहा।

'इस बार जाल फेंको। उसमें जो कुछ फँसेगा, उसको सौ दीनारें लेकर हम खरीद लेंगे।' बादशाह ने कहा।

बूढ़े ने जगह बदलकर जाल फेंका। जाल में एक बड़ा सन्दूक फँसा। बादशाह ने बूढ़े को सौ दीनारें दीं। तुरंत नौकरों से सन्दूक ढुवाकर अपने राजमहल में ले गया।

बादशाह यह देखने के लिये उतावला होने लगा कि उस सन्दूक में क्या है। इसलिये वह सन्दूक को अपने निजी कमरे में ले गया। वज़ीर की मदद से सन्दूक खोला। तुरंत वे चकरा गये। वे देखते क्या हैं कि उस सन्दूक में एक युवती है। उसका शरीर खून से तरबतर है।

जब उसने गौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह स्त्री पूरी तरह न मरी थी, कहीं प्राण अटका हुआ था। उसके सिर पर जबर्दस्त घाव था। उसी में से खून बह रहा था।

बादशाह ने अपने हकीम को बुलाकर पूछा—"क्या उस स्त्री को जिलाने की गुँजाइश है?" हकीम ने कहा—"वह

कमला प्रसाद रस्तोगी

भरसक कोशिश करेगा ; मगर उसके जिन्दा रहने की उम्मीद कम ही है।''

बादशाह ने यह जानना चाहा कि यह स्त्री कौन है, उसको इस तरह मारकर, सन्दूक में रखकर नदी में डालनेवाला कौन हत्यारा है। वज़ीर ने सिपाहियों को शहर में भेजा। पर किसी को कुछ पता न लगा।

अगले दिन वज़ीर और बादशाह ने मिलकर एक चाल सोची। बादशाह ने शहर में यह ढिंढ़ोरा पिटवा दिया :—

'परसों रात को किसी दुष्ट ने एक युवती की हत्या कर, उसके शव को एक सन्दूक में रख टेम्रिस नदी में फेंक दिया। उस हत्यारे को पकड़ने के लिये हमने वज़ीर को एक रोज़ का वक्त दिया। पर वह कामयाब न हुआ। वह हत्यारे को न पकड़ सका। इसलिये शहर के चौक में, सब लोगों की हाज़िरी में वज़ीर का सिर कटवा देने का हम हुक्म दे रहे हैं। जनता आकर यह सब कुछ खुद देख सकती है।'

उस दिन चौक में हज़ारों आदमी इकट्ठे हुये। वज़ीर के हाथ पीठ पीछे बांधकर जल्लाद उसको वधस्थल पर लाये। उसी समय भीड़ में से एक व्यक्ति सामने आया और कोतवाल से गिड़गिड़ाकर कहने लगा—'हुजूर! हत्यारा मैं हूँ। वज़ीर को छोड़ दीजिये। मेरा सिर कटवाइये।'

कोतवाल वज़ीर को छोड़कर उस नौज़वान को साथ लेकर सीधा बादशाह के पास गया।

'तू ही हत्यारा है क्या? तो वह तेरी क्या होती है? उसने धोखा तुझे कैसे दिया?' बादशाह ने उस नौज़वान से पूछा।

नौज़वान की आँखों में से आँसू बहने लगे। वह यों कहने लगा :—

'हुजूर! वह स्त्री मेरी पत्नी है। बहुत ही पतिव्रता है। मैं ही पापी हूँ। जल्द-

बाज़ी में मैंने उस पर सन्देह किया और उसको मार दिया। उसके लिये खुदा मुझे सज़ा दे रहा है। मैं पछता-पछता कर जला जा रहा हूँ।'

'मेरी पत्नी हाल में बीमार पड़कर फिर स्वस्थ हो रही थी। उस समय उसे आम खाने की इच्छा हुई। कुछ भी हो, उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये मैं शहर भर घूमा। क्योंकि उन दिनों आम की मौसम न थी, इसलिये आम मुझे न मिला।'

'मालूम हुआ कि बागदाद जाने पर शायद वहाँ मिल जाय। पत्नी की इच्छा पूरी करने के लिये मैं बागदाद गया, और काफ़ी दौड़-धूप के बाद तीन लँगड़े आम खरीद लाकर उसको दिये। मेरी पत्नी बड़ी खुश हुई। उसने कहा कि रात को उन्हें खायेगी।'

'उस दिन शाम को जब मैं दूकान में बैठा हुआ था, तो एक गुलाम ने एक आम दिखलाकर पूछा—"इस तरह के आम कहीं न मिलेंगे, खरीदोगे?" उस आम को देखने से लगता था कि मेरे लाये हुये आमों में से एक हो। 'यह तू कहाँ से लाया?'—मैंने पूछा। उस गुलाम ने तब मुझ से कहा—

"हुजूर! एक स्त्री मुझे बहुत पसन्द करती है। उसी ने ही मुझे यह फल दिया है। उसका पति उसके लिये बागदाद से यह फल लाया था। क्या आपको चाहिये?'

उसकी बात पर मैं यकीन न कर सका। मेरी पत्नी तो इतनी गई-गुज़री नहीं है। फिर भी सच जानने के लिये झट दूकान बन्द कर घर गया। घर में दो ही आम थे, तीसरे आम के बारे में पूछने पर मेरी पत्नी का चेहरा उतर आया। उसने कहा कि उसे कुछ न मालूम था। गुलाम की बात पर मुझे विश्वास हो गया। न मैंने

आगे देखा, न पीछे। एक बड़ा डंडा लिया, और पत्नी के सिर पर ज़ोर से दे मारा। डंडे की चोट से वह वहीं ढ़ेर हो गई। घर के एक पुराने सन्दूक में उसका शव रख कर अन्धेरा हो जाने पर, सन्दूक को नदी में फेंक, घर वापिस आ गया। जब मैं घर में घुस रहा था, बाहर दरवाज़े के पास किसी लड़के का हिचकियाँ भर भरकर रोना मुझे अन्धेरे में सुनाई दिया। जब पास जाकर देखा तो वह मेरा लड़का ही था।

'इस अन्धेरे में बाहर क्यों बैठा हुआ है? क्यों रो रहा है?'—मैंने उससे पूछा। तब वह कहने लगा—'माँ के रखे हुये आमों में से एक को लेकर मैं गली में आया। तब एक गुलाम ने मुझे देखकर पूछा—'तुझे यह फल कहाँ से मिला?' मैंने कहा कि मेरे पिताजी, माताजी के लिये बागदाद से लाये हैं। मैं माँ के बिना जाने एक उठा लाया हूँ।' गुलाम ने पूछा—'क्या तुम्हें ऐसा करना चाहिये था? वह आम मुझे दे दो। नहीं तो अभी जाकर तुम्हारी माँ से कह दूँगा।' मैंने डर कर उसको आम दे दिया। 'घर में गया तो माँ मुझे पीटेगी! मुझे डर लग रहा है।' लड़के ने कहा।

मुझे बिना किसी कारण के पत्नी को मारने का बड़ा रंज हुआ। लड़के को देख कर तो वह दुःख दस गुना हो गया। सबेरे से उस गुलाम को खोज रहा हूँ। अगर वह मुझे दिखाई देता तो मैं उसका काम तमाम कर देता। सिर तो उसका कटवाया जाना चाहिये। जब निष्कारण वज़ीर साहब को सज़ा दी जाने लगी, तो मैं चुप न रह सका। जो कुछ गुज़री थी, मैंने कह सुनाई। मुझे सज़ा देकर, मुझ जैसे जल्दबाज़ों को सबक सिखाइये!'—नौज़वान ने कहा।

'यह तो ज़ाहिर है कि तुझे अपनी पत्नी पर प्रेम है। नहीं तो उसकी इच्छा पूरी करने के लिये बागदाद जाकर आम न लाया हुआ होता। तेरी पत्नी का कसूर है, यह सोचकर ही तूने उसका कत्ल किया है। तुझे यह विश्वास चार आने के लालच से उस गुलाम ने ही झूठ बोलकर करवाया था। इसलिये सज़ा उसको मिलनी चाहिये। तुझे छोड़े देता हूँ। तेरे लड़के के पास से आम ले तेरे पास बेचनेवाले गुलाम को हम सज़ा दे सकते हैं। तू जा सकता है।' बादशाह ने कहा।

"हुजूर! अगर आप उस गुलाम को सज़ा देना चाहते हैं, तो मैं एक घड़ी भी जिन्दा नहीं रहना चाहता। पछतावा मुझे जला रहा है। मौत की सज़ा देकर मुझे इस दर्द से छुटकारा दिलवाइये।" नौज़वान ने फ़रियाद की। मगर बादशाह ने न माना।

एक बेकसूरवार स्त्री के बारे में झूटी-मूटी अफ़वाह उड़ानेवाले को पकड़कर सज़ा देनी ही चाहिये। उसे हमें कैसे पकड़ना चाहिये, यह सोचता-सोचता वज़ीर घर गया।

वज़ीर ने ज्योंही घर के दरवाज़े पर कदम रखा तो उसकी पोती हाथ फैलाकर—'बाबा' कहती दौड़ी-दौड़ी आई।

वज़ीर ने प्रेम से उठाकर उसको चाहा तो उसके मुख से आम की खुशबू आई।

उसने अचम्भे में पूछा—'तुझे आम कहाँ से मिला?'

'गुलाम रहीम ने दिया था। बाबा, उसे आम, सुना है, कहीं मिल गया था।' वज़ीर की पोती ने कहा।

जल्दी ही चोर पकड़ा गया। जब वज़ीर ने उसे बुलाकर डराया-धमकाया, तो रहीम

ने कहा कि उसी ने झूटी बातों से फुसला कर बच्चे से आम लिया था। उसीने दूकान में झूटी बातें कह उसे बेचना चाहा था। जब वह उसे बेच न सका तो उसे घर लाकर पूरा एक रोज़ रखा। अगले दिन थोड़ा वज़ीर की पोती को देकर, बाकी वह खुद खा गया था। वह सब मान गया।

नौज़वान को खबर मिली कि आम को चुरानेवाला गुलाम पकड़ा गया है, और उसकी सुनवाई के लिये उसको तुरंत हाज़िर होना चाहिये। वह दरबार में गया। उसने गुलाम को पहिचान लिया। उसीने उसको आम बेचना चाहा था।

'सुनवाई पूरी होने के लिये एक और गवाही की ज़रूरत है। तुम्हें मुरदे को पहिचानना होगा।' बादशाह ने नौज़वान से कहा।

यह सोचकर कि यही उसके लिये ठीक सज़ा है। नोज़वान बादशाह के साथ एक कमरे में गया।

जब उसने एक बिस्तरे पर अपनी पत्नी का शरीर देखा तो उसके दिल से दुःख फूटने लगा।

परन्तु जब आँखें खोलकर उसकी ओर देखकर वह धीमे धीमे मुस्कराई तो उसके आश्चर्य और आनन्द की सीमा न थी।

वह उसके पैरों पड़ अपनी जल्दबाजी के लिये रो रोकर माफ़ी माँगने लगा।

बादशाह ने भी रहीम को कोई सख्त सज़ा न दी।

क्योंकि रहीम ने उस लड़के को डरा-धमकाकर आम तो ले लिया था, पर उसको यह न मालूम था कि वह उस लड़के के पिता के सामने ही वह आम बेचने की कोशिश कर रहा था।

वत्स राज्य का उदयन राजा था। कौशाम्बी उसकी राजधानी थी। यौगन्धराय उसका प्रधान मन्त्री था। उदयन नौजवान और सुन्दर था। वीणा बजाने में बहुत प्रवीण था। उसके पास घोषवती नाम की प्रसिद्ध वीणा थी।

राज-कार्य मन्त्रियों को सौंपकर उदयन वीणा की सहायता से जङ्गल में हाथियों को फँसाने में अपना समय काटता। जब वह जङ्गल में बैठकर वीणा बजाना शुरु करता तो हाथियों के झुण्ड मुग्ध हो, उसके पास आ जाते। और वह उनको पकड़वा देता। यह सोचकर कि उसके अनुकूल कोई सुन्दर कन्या नहीं है, उदयन ने विवाह भी नहीं किया था।

परन्तु हर दृष्टि से उसके योग्य एक कन्या थी—उज्जयिनी के राजा चंडमहासेन की कन्या—वासवदत्ता। परन्तु बहुत दिनों से उज्जयिनी और कौशाम्बी के राजाओं में पारिवारिक शत्रुता चली आ रही थी। चंडमहासेन की अपनी कन्या की शादी उदयन से करने की इच्छा तो थी, पर उदयन से इस विषय में बातचीत करना वह अपनी शान के खिलाफ़ समझता था। इसलिये उसने एक तरीका ढूँढ़ निकाला। दूतों द्वारा उसने उदयन को खबर भिजवाई—'आप हमारे घर आकर हमारी लड़की को वीणा बजाना सिखाइये।'

उसका निमन्त्रण पाते ही उदयन आग बबूला हो उठा। परन्तु मन्त्रियों की सलाह पर अपना गुस्सा रोक उसने यों जवाब लिख भेजा:—

'अगर आपकी लड़की को मुझ से वीणा सीखने की इच्छा है, तो उसे आप कौशाम्बी भिजवा दीजिये।'

एस. के. निगम

खबर पहुँची कि उसके जङ्गल में कोई एक बहुत बड़ा हाथी चर रहा है। उदयन नौकर-चाकर के साथ उसको पकड़ने के लिये निकल पड़ा। भला उसको बिना पकड़े, उसे नींद कैसे आती? दूरी पर उसने जङ्गल में हाथी देखा। उसे लगा, जैसे वह सूंड और पूँछ हिला रहा हो। बड़े से बड़े हाथी भी उसके सामने बच्चे-से लगते थे। पर वह हाथी बहुत विशाल था।

उतने बड़े हाथी को अपने संगीत द्वारा उदयन ने पकड़ना चाहा। वह वीणा बजाने लगा।

वह शाम तक लगातार वीणा बजाता रहा, पर वह हाथी सिर्फ़ दस-पाँच गज़ ही पास आया। अगर वहीं बैठ वह वीणा बजाता रहता तो थोड़ी देर में अन्धेरा हो जाता; इसलिये वह वीणा बजाता हुआ हाथी के पास गया। उसके नौकर-चाकर दूर ही खड़े रह गये। जब उदयन हाथी के पास पहुँचा तो कृत्रिम हाथी के पेट से सैनिक बाहर निकले और वे उदयन को बांधकर उज्जयिनी की ओर भाग निकले।

उदयसेन चंडमहासेन का कैदी हो गया। परन्तु चंडमहासेन ने किसी प्रकार

चंडमहासेन का विश्वास था कि जब उदयन वासवदत्ता को वीणा बजाना सिखाना शुरू कर देगा, तो वह उससे प्रेम करने लगेगा। परन्तु अपनी लड़की को उदयन के पास भेजना वह अपनी कुल-मर्यादा के विरुद्ध समझता था। इसलिये उसने जैसे-तैसे अपने होनेवाले दामाद को उज्जयिनी लिवा लाना चाहा।

उसने दुनिया में सबसे बड़ा एक कृत्रिम हाथी बनवाया। उसके पेट में चंडमहासेन के सैनिक छुपकर बैठ गये। उस हाथी को रात के समय कौशाम्बी के पासवाले राज्य में रख दिया। उदयन के पास अगले दिन

की उसको तकलीफ़ न होने दी। उसको हर प्रकार की सुविधा देकर वासवदत्ता के पास वीणा सिखाने के लिये भेजा। ज्योंही उदयन ने वासवदत्ता का मुँह देखा तो उसको लगा, मनों वह कैदी न हो। जब वह सामने बैठकर वीणा पर अभ्यास कर रही होती, तो उदयन उसको देखकर फूला न समाता।

जब कौशाम्बी नगर में यह मालूम हुआ कि उनका राजा कैदी कर लिया गया है, तो लोग उत्तेजित हो उठे। उज्जयिनी पर हमला करने के लिये लालायित होने लगे। दूरदर्शी यौगन्धराय ने लोगों को समझाया-बुझाया। उनको सब्र करने के लिये कहा।

'धोखे से हमारे राजा को वे पकड़कर ले गये हैं। मैं भी बुद्धि-बल से उनको छुड़वाकर लाऊँगा'—मन्त्री ने कौशाम्बी प्रजा को वचन दिया।

अगले दिन यौगन्धराय ने दूसरे मन्त्रियों को राज्य-कार्य अच्छी तरह देखने के लिये कहा और स्वयं केवल बसन्तक को साथ लेकर निकल पड़ा। रास्ते में, विन्ध्य प्रदेश में पुलिन्दिक राज्य करता था। वह उदयन का घनिष्ठ मित्र था। यौगन्धराय ने उसको

सारी घटना सुनाई। सैनिकों को सन्नद्ध कर, सावधान रहने के लिये उसको कह वह वसन्तक को लेकर उज्जयिनी की तरफ़ बढ़ा।

उज्जयिनी के पास महाकाल नामक श्मशान था। उसमें यौगन्धराय और वसन्तक ने अपना अपना वेश पूरी तरह बदल लिया। वसन्तक ने ऐसा वेष धरा, जिसे देखते ही, लोग हँस पड़ें। उसने जादूगर का रूप रखा। यौगन्धराय ने एक बिचारे पागल का वेष धरा।
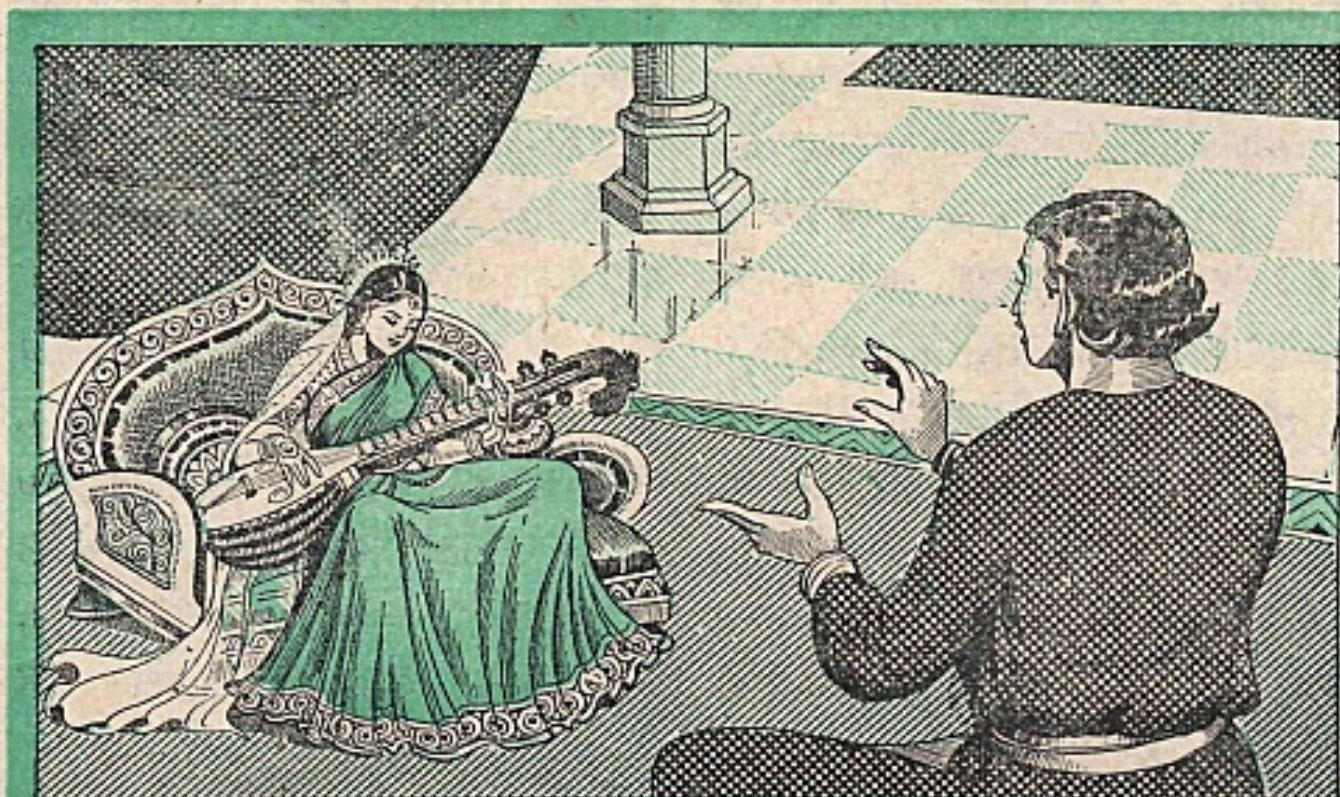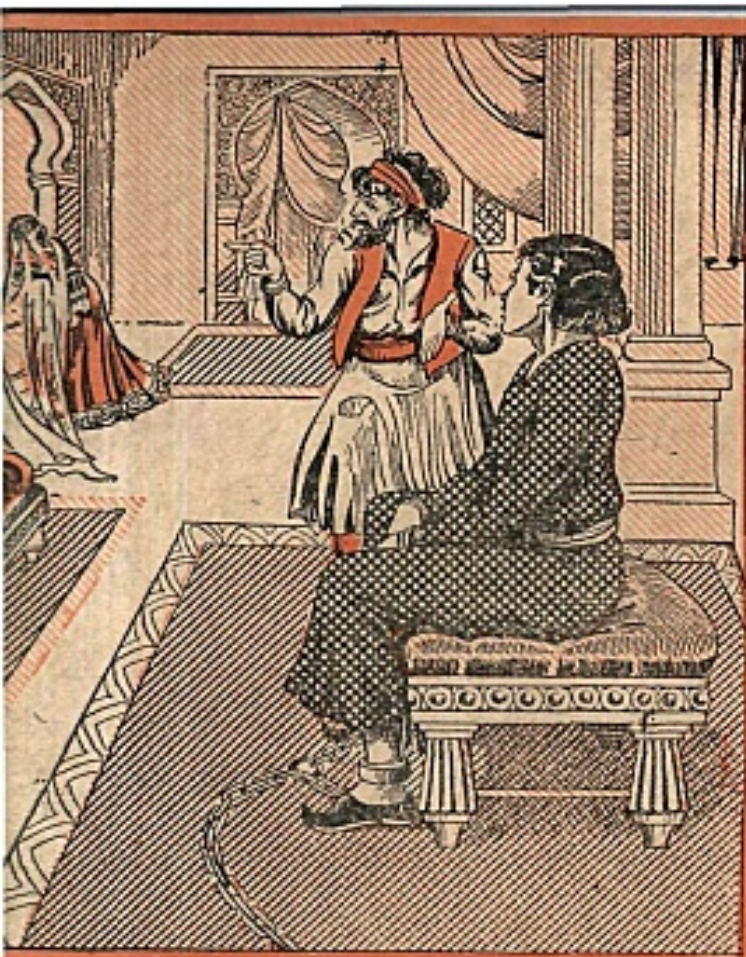
वसन्तक पहिले गया और राजमहल के सामने तमाशा दिखाने लगा। उसको देखने के लिये अंतःपुर के नौकर-चाकर, दास-दासियाँ भी भागी भागी आईं। बासवदत्ता भी वीणा छोड़ उसको देखने के लिये बाहर गई। उस समय पागल का वेष धरे यौगन्धराय अकेले में बैठे उदयन के पास आया।

उदयन को कैद में देख यौगन्धराय की आँखों में अनायास आँसू छलक पड़े। आँसू देख उदयन ने उसे पहिचान लिया।

'राजा! अगर जैसे-तैसे आपने इस वासवदत्ता को अपनी तरफ़ कर लिया, तो मैं आपको इस कैद से बाहर ले जाऊँगा। इसलिये आप इसी कोशिश में रहिये। मैं फिर दिखाई दूँगा।'—यह कह यौगन्धराय चला गया।

पहिले से ही, उदयन और वासवदत्ता ने चोरी चोरी एक दूसरे से प्रेम करना शुरू कर दिया था। इसलिये वासवदत्ता को अपने पक्ष में करने के लिये उदयन को अधिक समय न लगा। मौका मिलते ही, बिना पिता को बताये ही उदयन के साथ भाग निकलने के लिये बासवदत्ता मान गई।

चंडमहासेन के पास जितने हाथी थे, उनमें सबसे अधिक तेज़ भद्रावती हाथी

था। उसके महावत का नाम था—आषाढ़क। भद्रावती को राजा ने पहिले ही वासवदत्ता को उपहार में दे रखा था। यौगन्धराय ने आषाढ़क को खूब रुपया-पैसा देकर अपनी तरफ़ कर लिया।

यौगन्धराय ने उदयन को कैद से छुड़ाने का उपाय सोचकर वसन्तक को बताया। वह स्वयं दो दिन पहिले ही पुलिन्द नगर के लिये रवाना हो गया।

उस दिन रात को राजा के मुख्य महावत को मन्त्री ने खूब पिलाया। वासवदत्ता ने उदयन को धनुष, बाण, तलवार, कटार, आदि, शस्त्र लाकर दिये। आधी रात के समय उदयन, वासवदत्ता, वसन्तक, भद्रावती हाथी पर चढ़कर भाग निकले। राज महल में जिन जिन सैनिकों ने उनका रास्ता रोका, उदयन ने उनको मार दिया। नगर से बाहर जा, भद्रावती पुलिन्द नगर के रास्ते पर चलने लगा।

"कैदी उदयन हाथ से निकल गया है!" बचे-खुचे सैनिकों ने यह बात चंडमहासेन को बतायी। तब तक काफ़ी समय हो चुका था। चंडमहासेन हाथी पर चढ़, नौकर-चाकरों के साथ निकल पड़ा। परन्तु

उसके पास ऐसा कोई हाथी न था, जो चलने में भद्रावती का मुकाबला कर सके।

जब उदयन आदि, विन्ध्य प्रदेश के पास पहुँचे, तो भद्रावती थककर चूर हो गया था। उसने खूब पानी पिया और वह अचानक मर गया। वहाँ से उदयन, वासवदत्ता, और वसन्तक पैदल ही पुलिन्द नगर की ओर बढ़े। रास्ते में उन्हें चोरों ने रोका। परन्तु उन्हें उदयन ने अपनी तलवार का शिकार बना दिया। वासवदत्ता कभी वैसी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर

न चली थी। उसके पैरों में कांटे चुभ गये। जैसे तैसे वे सही-सलामत पुलिन्द नगर पहुँचे।

उसी समय उदयन की सहायता करने के लिये कौशाम्बी से वहाँ सेना पहुँच चुकी थी। उन्होंने अपना शिविर बना लिया था। वे युद्ध के लिये सन्नद्ध थे।

चंडमहासेन से लोहा लेने के उद्देश्य से उदयन शहर में भी न गया। वहीं तम्बू में उनकी प्रतीक्षा करता रहा। उज्जयिनी की सेनाओं का मुकाबला करने के लिये ज़रूरी तैयारियाँ की गईं।

तब चंडमहासेन ने दूत द्वारा उदयन के पास एक सन्देश भेजा, जो यों था :—

'राजा! मुझे इसकी परवाह नहीं कि तुम मेरी लड़की को भगाकर ले गये हो। तुम दोनों का विवाह करने के लिये ही मैंने तुम्हें कैदी बनवाया था। इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों का विवाह विधि प्रकार सम्पन्न हो। यदि कुछ समय दिया गया तो मेरा लड़का स्वयं जा अपनी छोटी बहिन का विवाह यथाविधि धूम-धाम के साथ करवायेगा।'

यह सन्देश पढ़ते ही उदयन बहुत ही सन्तुष्ट हुआ। मायकेवालों से तो अब कोई झगड़े की सम्भावना नहीं है, यह सोच वासवदत्ता भी बड़ी खुश हुई।

सब मिलकर कौशाम्बी नगर गये। वहाँ विवाह का शुभ मुहूर्त निश्चय किया गया।

ज़ोर-शोर से विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। विवाह के अवसर पर वासवदत्ता का भाई गोपालक तरह तरह के कीमती उपहार लेकर आया। उदयन का मित्र पुलिन्दक और अनेक मित्र मय अपने दरबारियों के आये। उदयन और वासवदत्ता का विवाह बड़े धूमधाम से हुआ।

चन्दामामा

चन्दामामा के बारे में पिछले अंक में कुछ बातें बताई थीं। इस महीने कुछ और विवरण दिये जाने हैं।

कभी भूमि एक दहकता लावा पिंड था। भूमि में से कुछ लावा बाहर जा गिरा, और वह काल-गति से जम गया। उसी को वैज्ञानिक चन्द्रमा बताते हैं। पहिले चन्द्रमा भूमि के बहुत पास था और भूमि की चारों ओर परिक्रमा किया करता था। होते होते वह भूमि से दूर चला गया।

भूमि की चारों ओर का प्रदक्षिणा मार्ग अंडे के आकार का है। इसी कारण चन्द्रमा कभी कभी भूमि के पास होता है, तो कभी दूर।

जितना समय चन्द्रमा भूमि की परिक्रमा में लेता है, उतने समय में वह अपने आप भी एक चक्कर खाता है। इसलिये भूमि से चन्द्रमा का मुख पार्श्व ही दिखाई देता है। उसके पिछले भाग में क्या है, यह जानने का अवसर नहीं मिलता।

हमारी भूमि २४ घंटे में एक बार आत्म-प्रदक्षिणा करती है। चन्दामामा को अपने आप में घूमने के लिये और भूमि की चारों ओर घूमने के लिये २७ रोज़, ७ घंटे, ४३ मिनिट, ११ सेकन्ड लगते हैं।

चन्दामामा का एक रोज़ २७ रोज़ से अधिक है। इसमें आधा—करीब करीब १४ रोज़ दिन और १४ रोज़ रात है। चन्दामामा में दिन में बड़ी गर्मी होती है और रात में भीषण सर्दी। भूमि पर सूर्य की किरणें बहुत दूर से वायु में आती हैं, इसलिये हम उसको सहन कर सकते हैं। चन्दामामा में वैसी वायु नहीं है। इसलिये वहाँ जो गर्मी पड़ती है, उसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते। सूर्य में से नीली किरणें वायुमण्डल के कारण इधर उधर बिखर जाती हैं, इसलिये हमें आकाश नीला दिखाई देता है। चूँकि चन्दामामा में वायुमण्डल नहीं है, इसलिये वहाँ आकाश कोयले की तरह काला होता है, और उसमें सूर्य हज़ारों चन्दामामाओं की कान्ति से प्रकाशित होता है।

हस्तिनापुर में शिवदत्त नाम का एक अमीर ब्राह्मण रहा करता था। परंतु उसके घर में सुख-चैन न थी; क्योंकि उसकी पत्नी बड़ी चुड़ैल थी। पत्नी से आखिर न पट सकी, वह जीवन से ऊब गया। सन्यास लेकर वह घर से चला गया।

शिवदत्त के तीन लड़के थे। बड़े लड़के का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी ने जब से घर में पैर रखा, तब से सास ने उसको सताना शुरू कर दिया। उसने जैसे-तैसे कुछ दिनों तक कष्ट सहे, फिर उससे न सहा गया। वह अपने मायके चली गई। उसके पीछे उसका पति भी गया।

उसके बाद दूसरे लड़के की पत्नी आई।

उसकी पत्नी को भी चुड़ैल सास तंग करने लगी। दूसरी बहू बहुत ही सीधी-सादी और पतिव्रता थी। उसे मायके जाना पसन्द न आया, और वह सास के कष्ट भी न सह पाती थी। इसलिये उसने आत्म-हत्या कर ली। पत्नी की मृत्यु के बाद, दूसरे लड़के ने शोक में पलङ्ग पकड़ी।

अपने बड़े भाइयों की दुर्गति देखकर तीसरे लड़के वासुदत्त ने अपनी माँ को अच्छा सबक सिखाने का निश्चय किया।

उसकी माँ बहुत चुड़ैल थी। चूँकि घरवाले भोलेभाले थे, इसलिये लोगों को उसकी दुष्टता के बारे में कुछ न मालूम था। वे कहा करते थे कि बड़ी बहू ज़रा हठी थी, इसलिये वह अपने पति को लेकर मायके चली गई। दूसरी बहू ने भी यूँही निष्कारण आत्म-हत्या कर ली थी। वासुदत्त ने माँ की पोल खोलने की सोची।

वी. के. पाटणकर

वह एक दिन किसी दूसरे गाँव में जा कर एक काठ की स्त्री-मूर्ति बनवा लाया। आधी रात के समय वह उस मूर्ति को अपने गाँव ले आया। फिर अपने घर के पास वाले मकान में उसको रखा। एक दासी को वहाँ पहरे पर बिठा, उसने माँ के पास जा कर कहा—"माँ, मैंने विवाह कर लिया है। यदि मेरी पत्नी इस घर में रही तो ख्वाहम ख्वाह लड़ाई-झगड़े होंगे। इसलिये मैंने उसके रहने का प्रबन्ध बगलवाले मकान में कर दिया है। न वह यहाँ आयेगी, न तू वहाँ जायेगी।"

माँ मान गई। वह अपनी दो बहुओं का गुस्सा तीसरी बहू पर उतारना चाहती थी। मौका न पा वह खिझी हुई थी। एक दिन लड़के को घर में न पा उसने एक चाल चली। मूसल लेकर अपना सिर फोड़ लिया और छाती पीट-पीट कर रोने लगी। सब भागे भागे आये। लड़का भी आया। सब ने पूछा—क्या बात है?

'देखा आप ने? मेरी बहू बिना किसी वजह के, मेरे सिर पर मूसल मार, अन्दर जा दरवाज़ा बन्दकर बैठ गई है।' उस चुड़ैल ने सब को बताया।

'अरे अरे, यह भी क्या बला है।' सोचते सोचते ज्योंही लोगों ने बगलवाले मकान में ताका, तो देखते क्या हैं कि एक लकड़ी की मूर्ति खड़ी है।

'यह मेरी पत्नी है। इसीने मेरी माँ का सिर मूसल से चकनाचूर कर दिया है। यही दरवाज़ा बन्दकर अन्दर आ खड़ी हुई है।' वासुदत्त ने सबको बताया। सब ने चुड़ैल का मज़ाक उड़ाया।

उसके बाद वासुदत्त ने अच्छी लड़की देख उससे शादी कर ली। उसकी पत्नी को कभी भूलकर भी उसकी माँ ने कुछ न कहा।

चतुर बुढ़िया

धार राज्य के राजा भोजराज के दरबार में माघ नाम का एक कवि रहा करता था। वे दोनों एक दिन शाम को घूमने के लिये निकले। कविता के मज़े में दोनों बहुत दूर निकल गये। समय का ख्याल न रहा। अन्धेरा हो गया। जब उन्होंने राजमहल की ओर लौटना चाहा तो उनको रास्ता दिखाई न दिया। बहुत कोशिश की, पर रास्ते का पता न लगा।

किसी से पूछ-ताछकर रास्ते का पता लगाने के लिये वे पासवाली एक झोंपड़ी में गये। वहाँ उनको एक गरीब बुढ़िया बैठी हुई दिखाई दी।

भोजराज ने उस बुढ़िया से पूछा—"दादी, यह रास्ता कहाँ जाता है?"

"यह रास्ता कहाँ जाता है? यह तो राहगीरों को मालूम होगा। भला रास्ते को क्या पता? बेटा, तुम कौन हो?" चतुर बुढ़िया ने पूछा।

'हम यात्री हैं' माघ ने मुस्कुराते हुये कहा।

'इस सृष्टि में सूर्य और चन्द्रमा दो ही यात्री हैं। क्या तुम सूर्य और चन्द्रमा हो?' बुढ़िया ने पूछा।

'हम क्षणिक अतिथि हैं।' माघ ने जवाब दिया।

'धन और यौवन—ये दो ही क्षणिक अतिथि हैं। आप तो वे दिखाई नहीं देते?' बुढ़िया ने उनको गौर से देखते हुये कहा।

'हम राज्य-पालक हैं!'—भोजराज ने कहा।

'इन्द्र और यम—ये दोनों ही पालक हैं। आप तो वे नहीं हैं?'—बुढ़िया ने राजा को देख कर कहा।

सुरेशचन्द्र सक्सेना

'परन्तु हम सहन करनेवाले भी हैं।' भोजराज ने कहा।

'भूमि और स्त्री ही सहन करनेवाली हैं' –बुढ़िया ने कहा।

'हम वीतराग हैं'–माघ ने कहा।

'वीतराग कहने योग्य शनि और संतृप्ति मात्र हैं'–बुढ़िया ने कहा।

'हम परदेशी हैं।'–भोजराज ने कहा।

'जीवात्मा, और पेड़ों का पानी ही परदेशी हैं।'–बुढ़िया ने कहा।

'हम गरीब हैं।'–माघ ने कहा।

'मेमना, और लड़की ही गरीब हैं' –बुढ़िया ने कहा।

'हम समर्थ हैं।'–भोजराज ने कहा।

'सामर्थ्यवाले सिर्फ़ भोजन और पानी हैं।' बुढ़िया ने कहा।

'दादी, हम हार मानते हैं!'–माघ ने कहा। आखिर वह बुढ़िया का मुकाबला न कर सका।

'कर्ज़दार और लड़कियों के पिता के अतिरिक्त कोई कभी हारता है? बेटा, मगर तुम हो कौन? बताया नहीं, क्या चाहिये? अगर बताया, तो जो कुछ मुझ से बन सकेगा, मैं कर दूँगी।'–बुढ़िया ने बड़े प्रेम से कहा।

माघ ने अपना पांडित्य दूर रखा और कहा—'दादी! ये हैं भोजराज! मुझे माघ कहते हैं। हम राजधानी का रास्ता न पा आफ़त में फँसे हुये हैं।'

'यह बात पहिले ही क्यों न कह दी थी? सीधे उस रास्ते पर जाओ, राजधानी पहुँच जाओगे।'–बुढ़िया ने कहा।

भोजराज और माघ बुढ़िया द्वारा बताये हुये रास्ते पर चलते चलते राजधानी पहुँच गये। घर पहुँच भोजराज ने बुढ़िया के लिये बहुत-सा ईनाम भेजा।

रंगीन चित्र - कथा : चित्र - ३

राजा ने कहा था न कि कल सवेरे तक मुझ से कुछ न पूछना, बाद में तुम्हें स्वयं मालूम हो जायेगा ?

खैर, उस दिन रात को शयन-गृह में, रानी का हाथ राजा के सिर पर लगा। जब उसने प्रकाश में गौर से देखा तो न वहाँ गधे का सिर था, न कुछ और। उसको आश्चर्य हुआ। उसका पति एक बहुत ही खूबसूरत राजा था। यह देख रानी के सन्तोष की सीमा न थी।

रानी ने यह देख तो लिया, परन्तु राजा को यह मालूम ही नहीं था कि उसका सिर बदल गया है। जब रानी ने दिया उठाकर देखा तो रोशनी के कारण राजा जाग उठा। जब रानी ने अचम्भे में पूछा तो राजा यों कहने लगा:—

"अरे अरे, तू बहुत ही अभागिन है—कल सवेरे तक ठहरने के लिये कहा, पर तू ठहर न पाई। तब तक मैं शाप विमुक्त न होऊँगा। तेरे इस प्रकार पूछने से शाप देनेवाली राक्षसी को अब फिर शक्ति मिल गई। अब मुझे उसका गुलाम होकर, बीहड़ अमलतास के जङ्गल में एक लाल किले में रहना होगा।" कहते कहते राजा अदृश्य हो गया।

रानी अपनी गल्ती पर बहुत पछताई। वह पति का वियोग सहन न कर सकी और राजा को ढूँढने के लिये निकल पड़ी।

जाते जाते उसको रास्ते में वह अप्सरा दिखाई दी।

"माँ! सुना है, बीहड़ अमलतास के जङ्गल में एक किला है—वहाँ जाने के लिये रास्ता बता सकोगी?" रानी ने पूछा।

तब अप्सरा ने कहा—"मैंने लाल किले के बारे में सुना ज़रूर है, पर वहाँ का रास्ता मालूम नहीं है। उस किले में एक राक्षसी रहती है। वह बहुत ही दुष्ट है। फिर भी खैर, तुम डरो मत! मैं तुम्हें अपनी जादूवाली अंगूठी देती हूँ। यदि तुम इसे पहिनकर गई तो तुम अपने काम में सफल होगी!" अप्सरा ने अंगूठी दी और यह भी बता दिया कि उसका कैसा उपयोग किया जाय।

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अप्रैल १९५५ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।
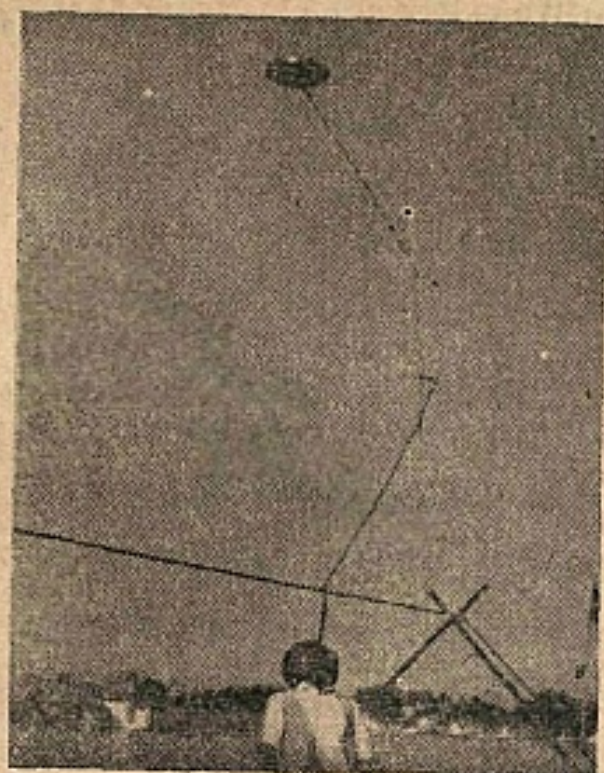
ऊपर के फोटो के लिये उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर-संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्न लिखित पते पर भेजनी चाहिये।

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

फ़रवरी - प्रतियोगिता - फल

फ़रवरी के फोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फोटो : अब क्या करें? दूसरा फोटो : हम भी लाचार हैं!

स्नेहलता देवी माथुर, द्वारा : आर. एन. मथुर, श्री. मानसिंका आइल मिल्स लि०, खण्डवा (म. प्र)

समाचार वगैरह

पाकिस्तान में आजकल बहुत राजनैतिक उथल-पुथल मची हुयी है। पाकिस्तान की संविधान सभा को विघटित कर दिया गया है। यह सात वर्ष से संविधान का मसविदा तैयार कर रही थी, जो यह पूरा न कर सकी।

मन्त्रि-मण्डल में भी काफ़ी रद्दोबदल हुयी है, और मध्य एशियाई मुस्लिम राष्ट्रों की तरह, इसमें फ़ौज के भी उच्च प्रतिनिधि हैं। डा. खान साहब भी इसके सदस्य हैं।

महम्मद अली प्रधान मन्त्री तो हैं, पर असली शक्ति गवर्नर जेनरल गुलाम महम्मद के हाथ में है।

प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि भारत में सिगरेटों की खपत कम हो रही है। अनुमान किया जाता है कि हुक्का अधिक लोक-प्रिय होता जा रहा है।

१९५० में २३,२९,२००,०००, सिगरेटों का उत्पादन हुआ था। १९५३ में सिगरेटों की उत्पत्ति १९,६७६,४००,००० तक गिर गई थी और अब भी निरन्तर गिरती जा रही है।

*　　*　　*

भारत की प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में दरारें पड़ रही हैं। एक दल तो कांग्रेस

के साथ मिलकर काम करना चाहता है, जिसके नेता श्री कृपलानी हैं, और दूसरा दल कांग्रेस का विरोध करना अपना कर्तव्य समझता है। इसके नेता डा. राम मनोहर लोहिया हैं।

* * *

समाचार मिला है कि चीनियों ने तिब्बत से सिक्यान्ग की तरफ़ १००० मील की सड़क बनाई है। संसार की यह सम्भवत: सब से ऊँची सड़क है, जो भयंकर पहाड़ी इलाके में बनाई गई है।

तिब्बत में अब भी धर्म और धर्म-वादियों का बोलबाला है। इस सड़क से चीन और तिब्बत में यातयात बढ़ेगा।

* * *

आन्ध्र की विधान सभा को रद्द कर दिया गया है और राष्ट्रपति का शासन आरम्भ हो गया है।

राष्ट्रपति के घोषणानुसार पुनर्निर्वाचन को प्राथमिकता दी गई है। निर्वाचन ता. ११-२-'५५ से शुरू होकर ता. २७-२-'५५ तक समाप्त हो जायगा।

यह दक्षिण में दूसरा राज्य है, जहाँ पुनर्निर्वाचन की व्यवस्था की जा रही है। पहिला राज्य ट्रावनकोर-कोचिन था।

* * *

बिहार सरकार छात्र-सेना के संगठन में अधिक दिलचस्पी ले रही है। इस सिलसिले में ५०० से २५,००० सैनिकों को बढ़ाने का निश्चय किया गया है।

नये छात्र सैनिकों की प्रशिक्षा अप्रैल १९५५ में शुरू की जायेगी। यह अभी तक नहीं ज्ञात हुआ है कि अन्य प्रान्तों में भी इस दिशा में कोई कार्य किया जा रहा है कि नहीं।

चित्र - कथा

एक दिन वास; दास के घर गया। वहाँ एक बेन्च पर तीन बड़े बड़े कद्दू रखे हुये थे। "चलो, नौकरानी को ज़रा चकमा दें, देखते ही वह डर भागे" कहते कहते वास ने अपने जेब में से चाकू निकाल, कद्दू में आँख, मुख, काटकर बनाये। दास ने उन पर बहुत ही अच्छी तरह से रंग लगाया। 'टाइगर' भी साथ था।

ठीक नौकरानी के आने के समय वे दोनों कद्दुओं के पीछे छुप गये। उनकी देखा-देखी 'टाइगर' भी एक कद्दू के पीछे छुप गया। जब नौकरानी बेन्च के पास आई, तो राक्षसों की शक्ल देख डर के मारे चिल्लाती चिल्लाती वहाँ से एकदम भाग गई। दास और वास ठट्ठा मारकर हँसने लगे। 'टाइगर' ने भी साथ दिया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras 26, and Published by him for Chandamama Publications, Madras 26. Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by B. Ranganathan

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

हम भी लाचार हैं!

प्रेषक
स्नेहलता देवी माथुर, खण्डवा

रङ्गीन चित्र-कथा, चित्र – ३